₹ २०
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
माघ २०७४
जनवरी २०१८
ISSN-2321-3981
ठंडी आई...

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

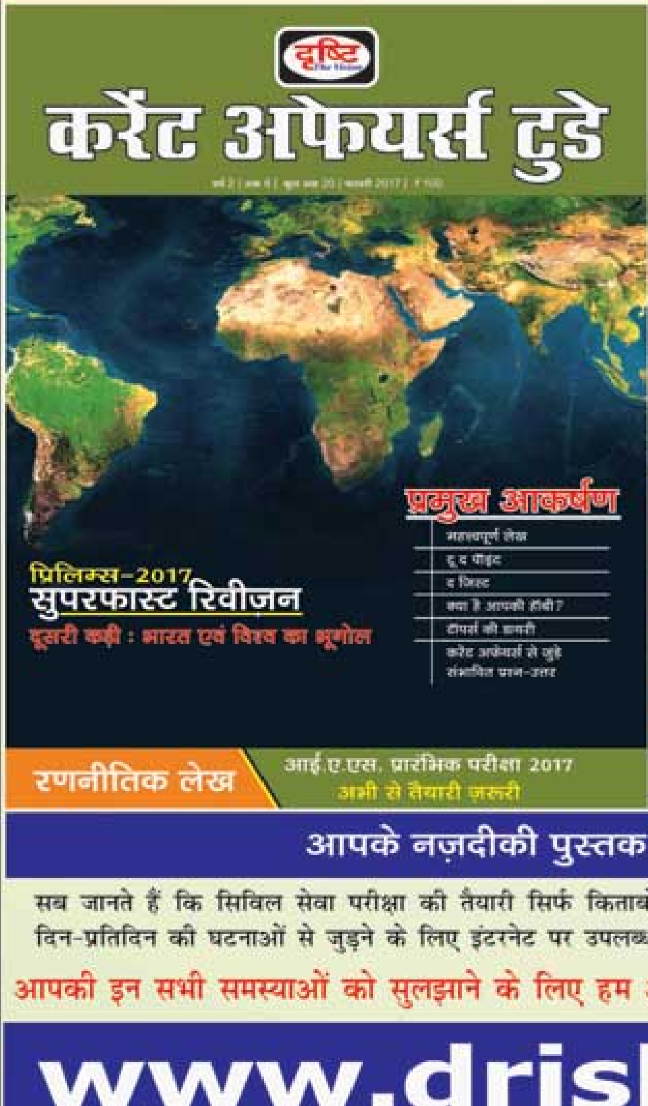

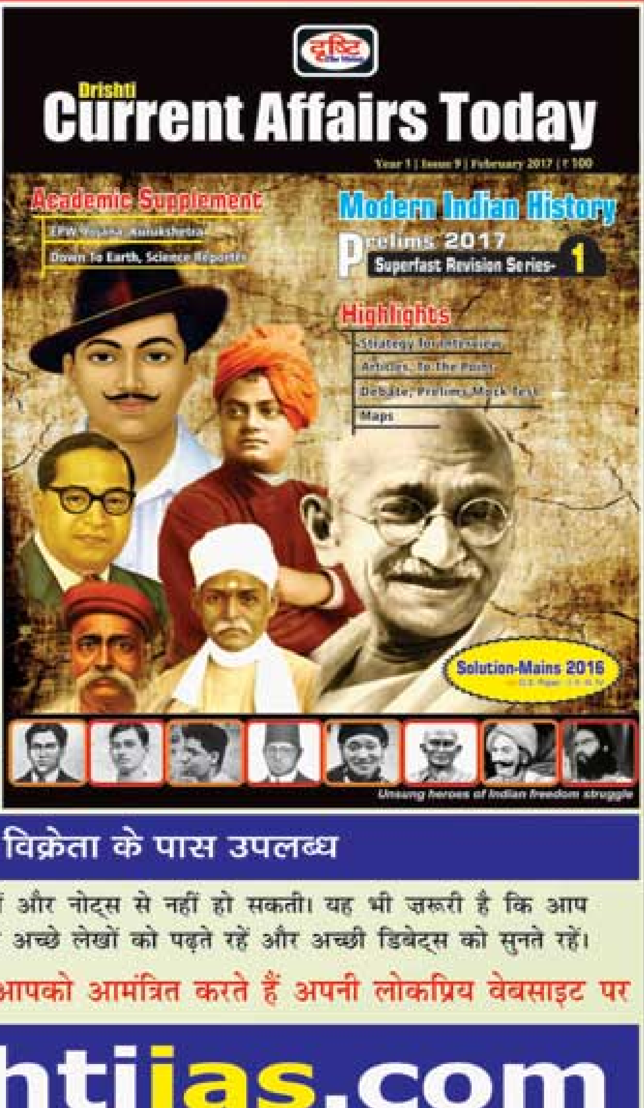

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ	२०७४	वर्ष	३८
जनवरी	२०१८	अंक	७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक (कम से कम १० अंक लेने पर)	:	१३० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या – 53003591451
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

पिछले अंक में आपसे चर्चा कर रहा था सुख और आनंद की। कई बार कुछ प्रसंग जीवन में ऐसे आते हैं कि देखकर सुख की परिभाषा एक बार फिर समझने को मन करता है।

मेरे एक मित्र इन्दौर के बहुत अच्छे चिकित्सक हैं। एक दिन उनके घर पहुँचा तो देखा पिता-पुत्री दोनों मुँह लटकाए बैठे हैं। पता किया तो मालूम हुआ बिटिया को ९५ प्रतिशत से अधिक अंक आने की संभावना थी। आ पाए मात्र ९२ प्रतिशत इसलिए दोनों का मन खिन्न था। पर ईश्वर को अपने बच्चे दुःखी अच्छे थोड़े ही लगते हैं। अचानक उनके यहाँ बरतन माँजने वाली बहन प्रकट हुई। हाथ में मिठाई का डिब्बा था। पुलकित होते हुए बोली ''मेरा बेटा पास हो गया है।'' उनके चेहरे की प्रसन्नता ने हम सबको भी प्रसन्न कर दिया। मैंने कनखियों से डॉ. सा. की बिटिया का चेहरा पढ़ते हुए उन बहन से पूछा, ''कितना प्रतिशत बना बेटे का?'' उन्होंने कहा- ''बाबूजी बना तो ५३ प्रतिशत है पर हमारे घर में तीन पीढ़ियों में यह पहला है जिसने १२ कक्षा तक पढ़ाई की है।'' मैंने उनको कहा- ''पता है हमारे डॉ. साहब के परिवार में भी आज तक किसी ने ९२ प्रतिशत अंक प्राप्त नहीं किए हमारी बिटिया भी इस परिवार में पहली ही है।''

इतना सुनते ही वो बिटिया दौड़कर मिठाई का डिब्बा लाई और प्रसन्नता से सबका मुँह मीठा करवाने लगी।

बच्चो! बात इतनी सी है कि हम जीवन में छोटी-छोटी खुशियों को जी ही नहीं पाते। बस भगवान को दोष देते रहते है। इसीलिए अंग्रेजी के एक विद्वान ने कहा था- ''यदि आपके पास जूते नहीं है और आप अपने भाग्य को कोस रहे हैं तो एक बार उस व्यक्ति से मिल लें। जिसके पैर ही नहीं हैं।''

अब हम सब अपने जीवन के हर आनन्द हर खुशी के क्षण को पूरी तरह जिएंगे यह संकल्प कीजिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- लाल पतंग - डॉ. राकेश चक्र ०६
- अमरूद की आत्मकथा - कृष्णदास चौधरी १६
- नितेश गुरूंग - विजयकांत मिश्रा १८
- प्रायश्चित - श्याम गुप्ता 'दर्शना' ३५
- रघ्घूमल ने दौड़ जीती - सुशील सरित ४२

आलेख

- विश्व बसंत में सरस्वती - बनवारी लाल ऊमरवैश्य २२
- वीर बालक हेमू कालानी - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ३०

लघुकथाएं

- कुछ दाने तुम - उर्मिला माणक गौड़ २४
- मेरे भाई के लिए - उर्मिला माणक गौड़ २५

कविता

- पतंग - रामगोपाल राही ०५
- जाग्रत भारत माता - सोमदत्त त्रिपाठी ०८
- अनूठा साधक - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ११
- सेना में चयन - अश्वनी कुमार पाठक ३९
- गंगा - डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' ४४

प्रसंग

- विलक्षण बुद्धि के धनी -देवेन्द्रराज सुथार १०

बाल प्रस्तुति

- उड़ी पतंग ज्योति राठौर १२
- पंछी पहेली अविनाश देवांगन २३

जानकारी

- पतंग की रंग बिरंगी... -राजेश गुजर १३

चित्रकथा

- नेकी का फल -देवांशु वत्स १५
- विचित्रताओं से भरा... - संकेत गोस्वामी २६
- अजनबी से दोस्ती - देवांशु वत्स ४५

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १४
- आपकी पाती - १४
- गाथा वीर शिवाजी की (१३) - ३२
- कामरूप के संत... डॉ. देवेनचंद्र दास 'सुदामा' ४०
- पुस्तक परिचय ४६

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

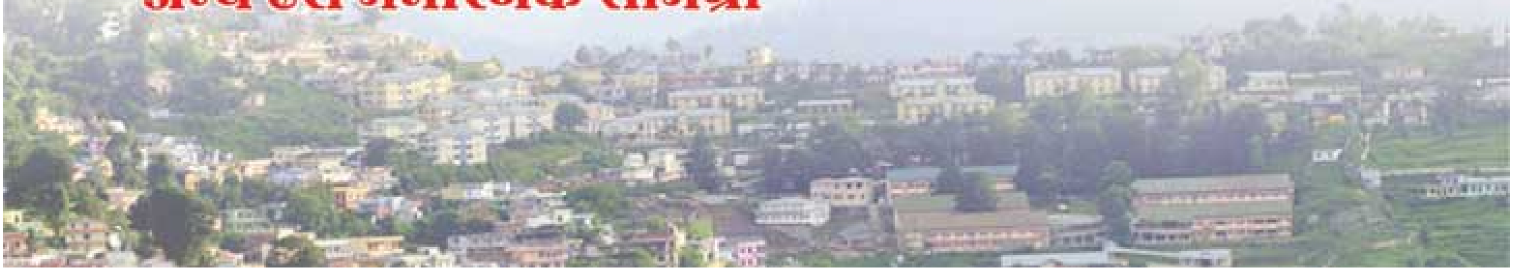

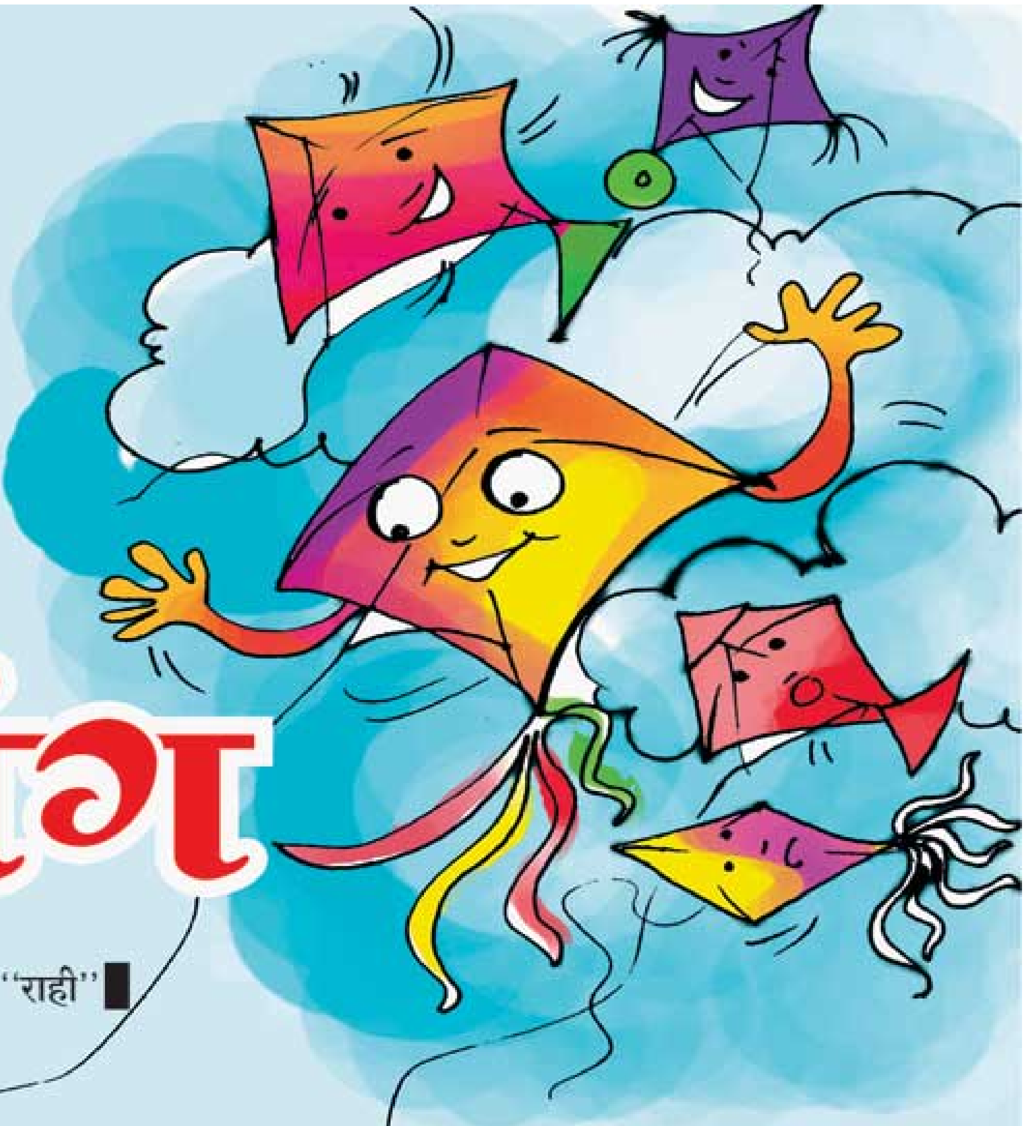

पतंग

कविता : रामगोपाल "राही"

देखो देखो उड़ी पतंग
छूने नभ को, चढ़ी पतंग।
इठलाय, बलखाय हवा से
इधर-उधर लो मुड़ी पतंग।।
रंग रंगीली उड़ी पतंग
डोरी से यह जुड़ी पतंग।
इसकी अपनी शान निराली,
उड़ी उड़ी लो उड़ी पतंग।।
उड़ने में न हटी पतंग,
भिड़ आपस में फटी पतंग।।
टूटी तो जा पड़ी दोस्तो
दूर कहीं पे कटी पतंग।।
लगती अच्छी सदा पतंग
दिखलाती है अदा पतंग।
उड़ते-उड़ते झट हो जाती,
जाने कब अलविदा पतंग।।
दूर दूर उड़ चली पतंग,
मन भाती मनचली पतंग।
तरह तरह की प्यारी प्यारी,
लगती उड़ती भली पतंग।।

• लाखेरी (राज.)

लाल पतंग

|कहानी : राकेश चक्र|

गोटियाँ में सैकड़ों वर्ष पुराना एक पीपल का वृक्ष था। घना और छायादार। जिस पर प्रतिदिन सैकड़ों पक्षी अठखेलियाँ करते और सुख पाते। पक्षियों के मीठे–मीठे सुरों से मन बाग–बाग हो जाता। गोंटियांवासियों को गर्मी की ऋतु में सुखद छाया मिलती। सावन के माह में बाल वृंद डालों पर झूला डालते। सोमवार, मंगलवार और शनिवार को श्रद्धालु उस पेड़ की पूजा–अर्चना करते, क्योंकि पीपल का वृक्ष, सूर्य की तरह शास्त्रानुसार पूजनीय और वंदनीय है। विज्ञान भी मानता है कि यही पेड़ ऐसा है, जो हमें रात–दिन ऑक्सीजन देता है।

इसी गोटियाँ में देवेश और महेश रहते थे। दोनों ही कक्षा पांचवीं में पढ़ते थे तथा उनमें अच्छी मित्रता थी। वे दोनों साथ–साथ पढ़ने विद्यालय जाते। कक्षा में पास–पास बैठते। मध्यावकाश साथ ही भोजन करते तथा साथ–साथ खेलते। दोनों को ही पतंग उड़ाने का बड़ा शौक था। प्रायः विद्यालय से लौटने के बाद और अवकाशवाले दिनों में वे जमकर पतंग उडाते। छत पर खूब धमा–चौकड़ी मचाते। ये काटा...वो कांट्टा..।

मकर संक्राति का दिन था। हजारों रंग–बिरंगी पतंगें आसमान में पक्षियों की तरह उड़ रही थीं। बच्चों के साथ–साथ बड़े भी पतंग उड़ाने का आनंद लूट रहे थे। वर्षों से लोग आज के दिन पतंग उड़ाकर खुशी प्रकट करते आए हैं। आज के दिन ही बड़ों को अपना बचपना स्मरण हो जाता।

देवेश और महेश भी पतंग उड़ाकर पूरा आनंद लूट रहे थे। ये काटा और वो काट्टा की आवाजें छतों, पार्कों, गली और सड़कों से आती हुई सुनाई पड़ रही थीं। कटी पतंगों पर बच्चे तथा बड़े झपट्टा मार रहे थे, जैसे कि चील अपना शिकार कर रही हो। उन्हें पतंग लूटते समय ये पता नहीं चल रहा था कि वे रेल की पटरियों पर हैं या सड़क पर किसी वाहन से टकराएँगे, गड्ढे में गिरेंगे या नाले–नालियों में जाएंगे या छत से ही पके आम की तरह जमीन पर आ जाएंगे। एक अनोखा शौक न जाने कब से आदमी ने पाला है कि जिसमें भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी और चोंट–फेंट का कोई अहसास नहीं रहता।

यकायक देवेश के घर के सामने शोर मचा कि सुधीर काका की गर्दन मंझे से कट गई है। बेचारे स्कूटर से बाजार सामान लेने जा रहे थे कि एक लड़के द्वारा पतंग का मांझा खींचते समय गर्दन कट गई है। काफी खून बहा है। दवा–पट्टी कराके आए हैं। गली में भीड़ लग गई। देवेश और महेश भी छज्जे से झाँककर देखने लगे।

देवेश ने महेश से कहा– ''यार देख! मंझे ने सुधीर काका के गले पर घाव कर दिया है। बेचारे बच गए जाने किससे टकराते।''

महेश बोला– ''अरे! उन लड़कों को बिलकुल अक्ल नहीं है, जो सड़क के किनारे पतंग उड़ाते हैं, चाहे किसी की गर्दन कटे या दुर्घटना हो...।''

''अरे! है तो पतंगबाजी बेकार का शौक, जिसमें बरबादी के अलावा कुछ नहीं है। अभी शाम तक देखना कि कितनों के चोट–फेंट लग जाएगी। कितना सद्दी–मंझा और फटी पतंगें सड़क, नालियों में गिरी मिलेंगी।''

''अरे देख! वे लड़के पतंग लूटने में मार–पिटाई कर रहे हैं।'' महेश ने देवेश को रेल की पटरियों की ओर इशारा करते हुए कहा।

''ये आवारा लड़के भी बड़े खराब होते हैं।''

''चल छोड़ भी उन लड़कों को हम पतंग उड़ाते हैं।''

देवेश और महेश फिर से पतंग उड़ाने लगे। देवेश के हाथ में पतंग की डोर और महेश के हाथ में चर्खी।

यकायक लाल रंग की पतंग कटती हुई छत के ऊपर से गुजर रहीं थी कि देवेश ने चिल्लाकर कहा– ''महेश! तू मेरी पतंग उड़ा, मैं इसे अभी लूटता हूँ।''

देवेश का ध्यान आसमान की ओर था। लक्ष्य था किसी तरह कटी पतंग की डोर पकड़ना। डोर पकड़ने के चक्कर में वह कब छज्जे पर पहुँचा और इतना झुका कि उसका संतुलन बिगड़ गया। नीम की निबोली–सा गली में गिरा। चीख–पुकार मची। कटी पतंग की डोरी पीपल के पेड़ की डाल में फँसी और पतंग उड़ती रही। उसने इशारा किया सावधान पतंग उड़ाने वालों।

दूसरे दिन देवेश को अस्पताल में होश आया। उसने आँखें खोलीं। पास बैठे लोगों के चेहरों पर खुशी लौट आई। महेश की आँखों से झर–झर आँसू झर रहे थे। मानो वह कह रहा हो कि अब कभी छतों, सड़कों या दुर्घटना संभावित, असुरक्षित स्थानों पर पतंग न उड़ाने का संकल्प ले लिया है। सच भी पतंग उड़ाने का आनंद तो है भी खुले मैदान में ही।

• मुरादाबाद (उ.प्र.)

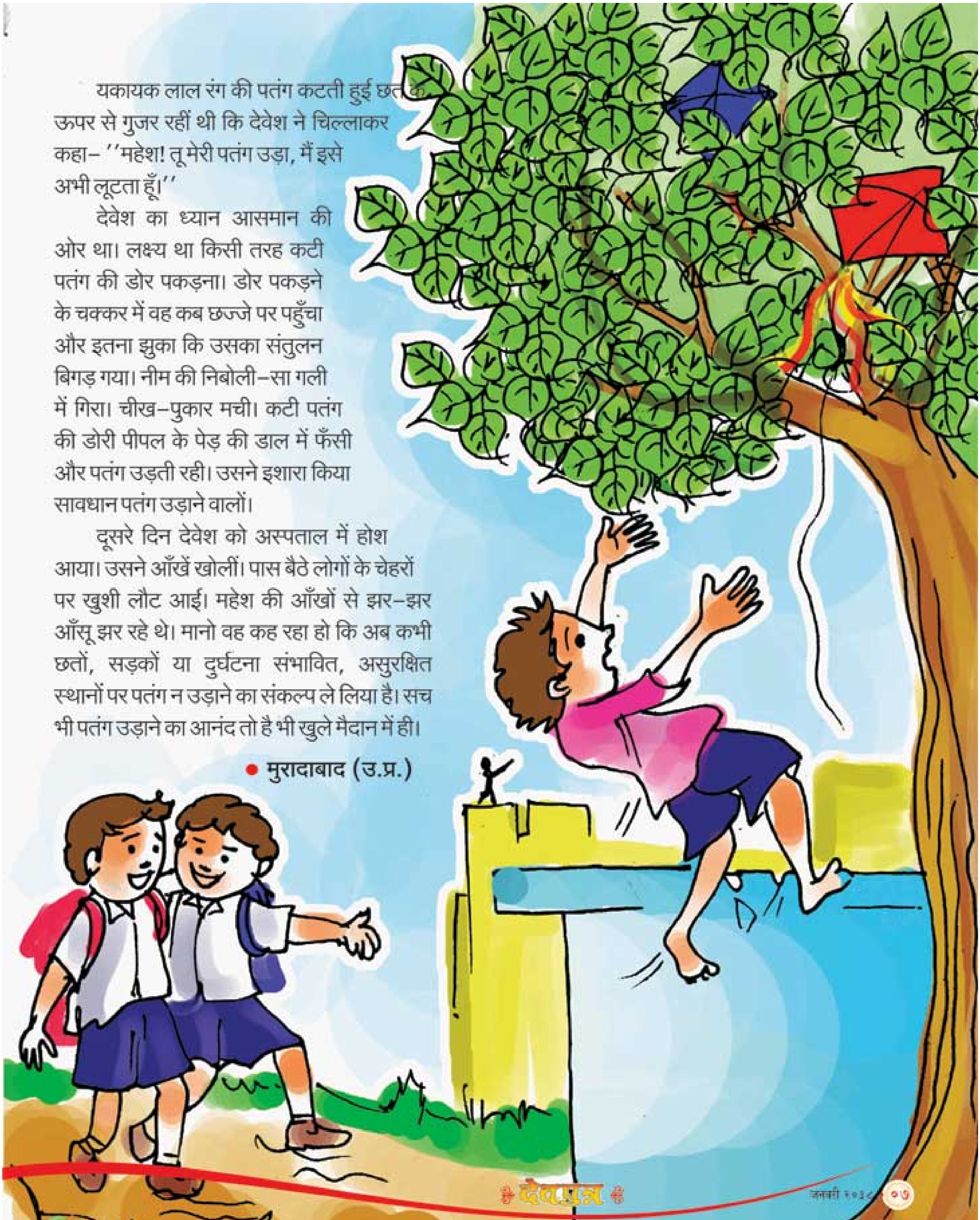

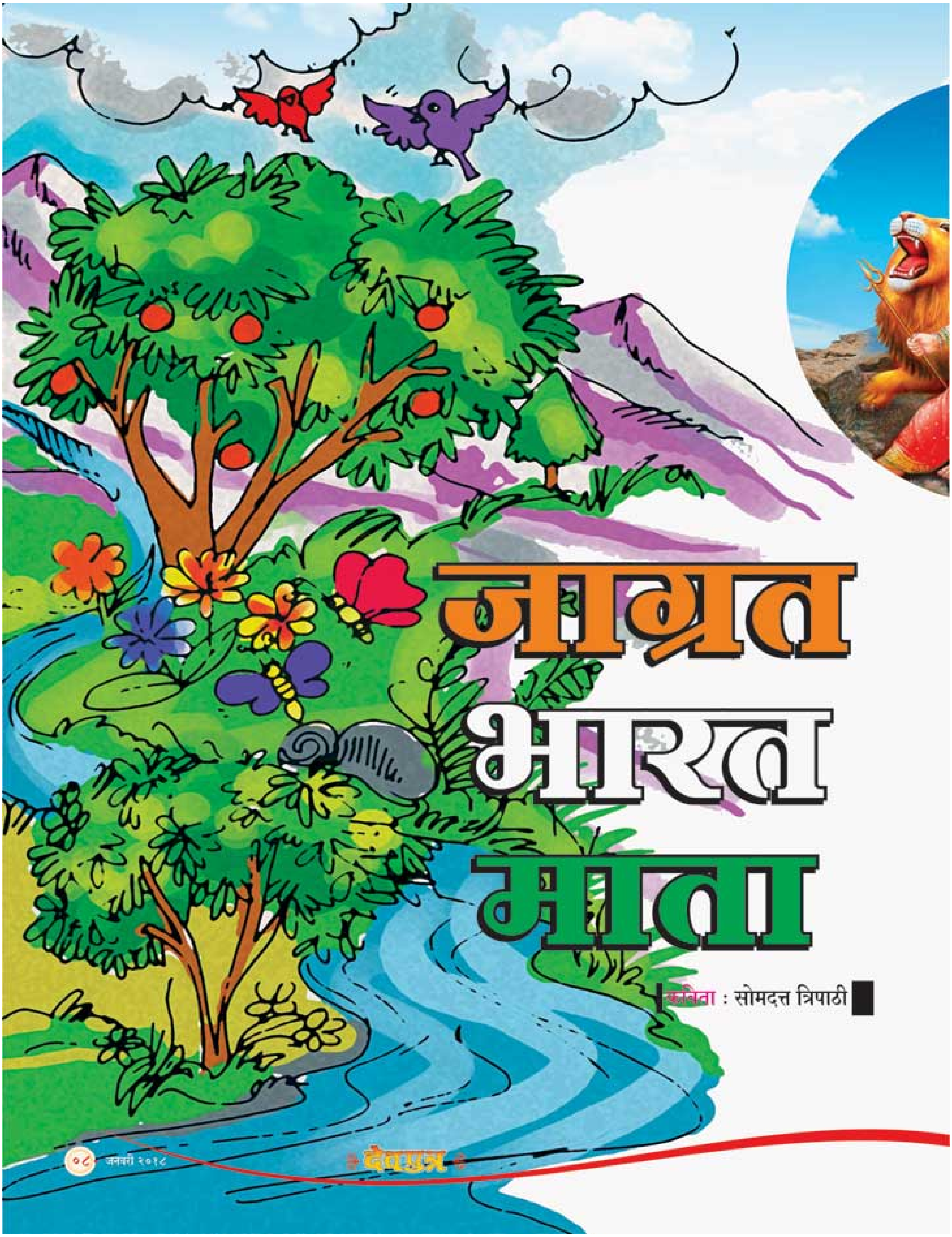

जाग्रत भारत माता

कविता : सोमदत्त त्रिपाठी

कंकड़-माटी मात्र नहीं यह धरती प्रेम पगाता।
जन,गण, मानस- सदन निवासिनी[1] जाग्रत भारतमाता।
धवल किरीट सुशोभित हिमनग,[2]
सागर चरण पखारे।
हाथ जोड़ श्रद्धा आप्लावित,
आस्थालहर निहारे।।
भरा भाव से इस माता पर, प्राण सुमन बलि जाता।
जन-गण-मानस-सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता।
चन्दनतुल्या रज से इसकी,
विकसे हैं षड्दर्शन।
इसकी क्रियाशील वत्सलता-
में अद्भुत आकर्षण।।
कोटि-कोटि सन्तति यश गाती जय-जय भारतमाता।
गिरि, द्रोणी,[3] समतल, सिकतामय[4]
सागर-वसना[5] माता।
वत्सल पीन[6] पयोधर विन्ध्या
जीवन-क्षीर प्रदाता।।
स्वर्गतुल्य इसकी माटी से, अमिट सनातन नाता।
जन-गण-मानस सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता
गैरिक[7] आभामयी कान्ति के,
सम्मुख सिर झुक जाता।
अमल अंग पर हरी साटिका[8]
सन्तति कर्मोद्गाता।।
त्याग, धर्म, निष्काम कर्ममय जन्म-जन्म का नाता।
जन-गण-मानस, सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता।
सुजला, सुफला, अमल यशस्विनि,[9]
अविरत प्रगति प्रदाता।
भाव भरे हम सादर कहते,
इसको भारतमाता।।
इस पर शत शत जन्म निछावर, भाग्यवान कर पाता।
जग-गण-मानस, सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता।
अंग-अंग में आभूषण सम,
हैं सहस्र सरिताएँ।
विमल सरोवर, झील, घाटियाँ
क्षण-क्षण रत्न सजाएँ।।
कोटि-कोटि भुज धृत कृति प्रहरण[10] जननी अभय प्रदाता।
जन-गण-मानस, सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता।
फहरे नील गगन में ऊँची,
पावन राष्ट्र-पताका।
खड़ी सिद्ध सन्तान मालिका,
व्रत धारे सेवा का।।
यही भाग्य, भगवान हमारी, यही हमारी माता।
जन-गण-मानस, सदन निवासिनी जाग्रत भारतमाता।

• भोपाल (म.प्र.)

(१) मानस सदन निवासिनी – मनमंदिर में रहने वाली
(२) हिमनग– हिमालय
(३) द्रोणी– दोने जैसी
(४) सिकतामय –रेतीला
(५) सागर वसना– समुद्ररूपी वस्त्र वाली
(६) पीन – पुष्ट
(७) गौरिक – भगवा
(८) हरी साटिका– हरी साड़ी
(९) अमल यशस्विनी – उज्ज्वल यशवाली
(१०) भुज धृत कृति प्रहरण– हाथों में शस्त्र लिए हुए

।। सुभाष जयंती : २३ जनवरी ।।

विलक्षण बुद्धि के धनी

प्रसंग:देवेन्द्रराज सुथार

नेताजी सुभाषचंद्र बोस का प्रसंग उस समय का है जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस इंग्लैंड में आईसीएस का साक्षात्कार देने गए। वहां उनका साक्षात्कार लेने वाले सभी अधिकारी अंग्रेज थे। दरअसल वे भारतीयों को किसी उच्च पद पर नहीं देखना चाहते थे। इसलिए साक्षात्कार में अजीबो-गरीब और कठिन से कठिन प्रश्न पूछकर भारतीयों को नीचा दिखाने का प्रयास करते रहते थे और उन्हें अस्वीकृत करने का मौका तलाशते रहते थे।

जब नेताजी की बारी आई तो वे साक्षात्कार के लिए अंग्रेज अधिकारियों के समक्ष बैठ गए। एक अधिकारी ने उन्हें देखकर व्यंग्य से मुस्कराते हुए पूछा- ''बताओ उस छत के पंखे में कुल कितनी पंखुड़ियां हैं?

इस अटपटे प्रश्न को सुनकर नेताजी की नजर पंखे पर चली गई। पंखा काफी तेज गति से चल रहा था। उन्हें पंखे की ओर देखता पाकर बोला- ''यदि तुम पंखुड़ियाँ की सही संख्या नहीं बता पाए तो इस साक्षात्कार में अनुत्तीर्ण हो जाओगे। एक और सदस्य बोला- ''भारतीयों में बुद्धि होती ही कहां है? उनकी बातें सुनकर सुभाष निर्भीकता से बोल- ''अगर मैंने इसका सही जवाब दे दिया तो आप भी मुझसे दूसरा प्रश्न नहीं पूछ पाएंगे। साथ ही मेरे सामने यह स्वीकार करेंगे कि भारतीय न सिर्फ बुद्धिमान होते हैं बल्कि वे निर्भीकता और धैर्य से हर प्रश्न का हल खोज लेते हैं।'' अंग्रेजों ने उनकी बात मान ली और उन्हें उत्तर देने के लिए कहा।

इसके बाद सुभाष तेजी से अपने स्थान से उठे। उन्होंने चलता पंखा बंद कर दिया और पंखा रुकते ही पंखुड़ियों की संख्या गिन ली। इसके बाद पंखुड़ियों की सही संख्या उन्होंने अधिकारियों को बता दी।

सुभाष की विलक्षण बुद्धि, सामयिक सूझबूझ और साहस को देखकर साक्षात्कार मण्डल के सदस्यों के सिर शर्म से झुक गए। बात को स्वीकार करना पड़ा कि भारतीय साहस, बुद्धिमानी और आत्मविश्वास से हर मुसीबत का हल खोज लेते हैं।

• बागरा (राज.)

।। विवेकानंद जयंती : १२ जनवरी ।।

अनूठा साधक

कविताः डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

तिथि थी १२ जनवरी १८६३
जब जन्मा नरेन कलकत्ता में।
झुक गई थी लताएं, घटाएं
समूची प्रकृति भी थी वंदना में।।
मनचला, उद्विग्न और हठीला
विशाल हृदय, बलिष्ठ गर्वीला
स्वछन्द प्रकृति का परिचायक
रूप था जैसे सिंह शावक
पुजारी संगीत का, कंठ सुरीला
युवकों का नेता आकर्षक छबीला
गुरु रामकृष्ण के कार्य अधूरे
साधा संकल्प करेंगे पूरे
राष्ट्र जागरण का अभिलाषी
देता रहा स्वयं की आहुति
फहरायी पताका पूर्व पश्चिम तक
मथा स्वयं को कार्य होने तक
दी भारतीय संस्कृति को पहचान
दिया दीन दुखियों को त्राण
चिंतन, लेखन भाषण पूजन
मानव हित ही मरना हर क्षण
सत्य ही शक्ति सत्य कल्याण
सत्य ही शुचि है, सत्य ही परमज्ञान
राजनीति से रहे दूर, कहते
सत्कर्म का करो आह्वान
सृष्टि की गंगा में कर्म की पतवार
दूर करती रही गहनतम अंधकार
था वह झंझावात जो हाकर चला गया
सोये भारत को जगा चला गया
४ जुलाई १९०२ बेलूरमठ में
वह संध्या घिर आई थी
अस्ताचल हुआ सूर्य सूर्य में
चला गया अल्पायु ३९ वर्ष में
चला अग्निशलाका सा यह कौन!
करवट बदली छाया चिर मौन।
अनूठा साधक था यह कौन।
गूंज उठा जयगान जय नरेन...
जय नरेन, जय जय नरेन...

● कटनी (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

उड़ी पतंग

कविता : ज्योति राठौर

सरसर सरसर उड़ी पतंग।
फर फर फर फर उड़ी पतंग।
रंगबिरंगी लाल गुलाबी,
नीली, पीली, हरी पतंग।।

बच्चों के मन को बहलाती,
और बड़ों को भी हर्षाती।
बादल के घर भी हो आती
खुशियाँ बांटे बड़ी पतंग।।

आसमान को छू आती है।
सारे बच्चों को भाती है।।
ऊपर जा छोटी सी दिखती।
नीचे जो थी बड़ी पतंग।।

हवा झकोरों पर इतराती।
पेंच कभी जब है लड़ जाती।।
कभी काटती और पतंगें
या कट खुद गिर पड़ी पतंग।।

• माचलपुर (म.प्र.)

।। जानकारी ।।

पतंग की रंग बिरंगी दुनिया

● राजेश गुजर

- प्रारंभिक समय में केवल रेशम के महीन कपड़ों से ही पतंगों का निर्माण होता था, लेकिन कागज के अविष्कार के बाद ही पतंगों का निर्माण कागज से किया जाने लगा, कागज रेशम से सस्ता भी है।
- भारत की लोकभाषा में पतंग को कनकौए या कनकैया कहकर पुकारा जाता था।
- बैंजामिन फ्रेंकलिन (वैज्ञानिक) ने बरसात में कड़क वाली बिजली को विद्युत तरंग साबित करने के लिए पतंग की मदद ली थी। इसमें उन्होंने धागे की जगह ताँबे के पतले तार का इस्तेमाल किया था, जिसे छूकर कोई भी आसानी से करंट का अनुभव कर सकता है।
- जापान में मछली के आकार की पतंगों का सर्वाधिक चलन है। जापान की पतंगबाजी दूसरे देशों से काफी भिन्न है।
- बरमूडा में ईस्टर के अवसर पर बाँस व रंगीन धागों से बनी पतंगें उड़ाने का चलन है।
- रेडिया के आविष्कारक मार्कोनी ने भी पतंग की सहायता से अटलांटिक के उस पार रेडियो तरंगों को भेजने में सफलता हासिल की थी। यह पतंग छह भुजाओं वाली थी।
- बाली में जुलाई महिने के अंत में एक उत्सव में पतंगें उड़ाकर ईश्वर से अच्छी फसल और खुशहाली की प्रार्थना की जाती है।
- थाइलैण्ड के लोग अपनी प्रार्थनाओं को भगवान तक पहुँचाने के लिए बरसात के दिनों में अपनी–अपनी पतंगें उड़ाया करते थे।
- कागज का आविष्कार होने से पहले से पतंग उड़ायी जाती रही, कहते हैं कि लगभग ३००० साल पहले उड़ाई गई पहली पतंग पत्तियों से बनी थी।
- इंग्लैण्ड के डगलस आर्किबोल्ड ने पतंगों के जरिए १२०० फीट की ऊँचाई पर बहती हवा की गति मालूम की थी।
- राइट बंधुओं ने हवाई जहाज का निर्माण करने से पूर्व उसके बारे में प्रारंभिक प्रयोग पतंगों के माध्यम से ही किए थे। वर्ष १८८७ में वैज्ञानिकों ने पतंग की सहायता से पहली बार आकाशी चित्र खींचने में भी सफलता प्राप्त की थी।
- मलेशिया में मानव आकृति की पतंगें अधिक लोकप्रिय हैं। कनाडा और अमेरिका में ग्रीष्मावकाश में पतंगों की बहार आती है, प्रतिवर्ष लगभग १५ करोड़ पतंगों की खपत होती है।
- गुजरात के अहमदाबाद की बात करें तो भारत ही नहीं पूरे विश्व में पतंगबाजी के लिए प्रसिद्ध है। हर वर्ष मकर संक्राति के अवसर पर यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन होता है।
- इतनी पतंगें उड़ती हैं कि नीला आसमान, इन्द्रधनुषी रंगों से सरोबार हो जाता है। चीन, जापान, नीदरलैण्ड, यूएसए, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, इटली और चिली आदि देशों से भी पतंगबाजों की फौज यहाँ आती है। पतंगों के विभिन्न देशों में विभिन्न नाम हैं जैसे– मलेशिया की वाऊबलांग, इंडोनेशिया की इयांग इन्यांघवे, यूएसए की विशाल वैनर, इटली की वास्तुपरक, जापान की रोक्काकू तथा चीन की ड्रेगन।

● महेश्वर (म.प्र.)

संस्कृति

प्रश्नमाला

- *सागर तट पर माता सीता के लंका के होने की जानकारी वानरों को किसने दी?*
- *महाभारत के युद्ध में ऐसा योद्धा कौन था जो सारथि भी बना और सेनापति भी बना?*
- *प्रम्बनन घाटी में १५६ मंदिरों का समूह लारा जोग्रांग नाम से जाना जाता है। यह दक्षिण पूर्व एशिया के किस स्थान पर है?*
- *प्रसिद्ध गुरुद्वारा केशगढ़-साहिब किस स्थान पर है?*
- *कश्मीर सहित सम्पूर्ण भारत का इतिहास बताने वाला कल्हण का लिखा ग्रंथ कौन सा है?*
- *कश्मीर के सबसे प्रसिद्ध और महापराक्रमी सम्राट कौन थे?*
- *आचार्य कंक से गणित का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बारह सौ साल पहले किस देश ने उन्हें आमंत्रित किया था?*
- *राजस्थान में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहाँ से प्रारम्भ हुआ?*
- *महर्षि अरविंद घोष को क्रांति कार्य में लगाने की प्रेरणा किसने दी थी?*
- *नौ महीनों तक पानी में डूबा रहने वाला मंदिर बाथू की लड़ी कहाँ पर है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

आपकी पाती

नवम्बर २०१७ का देवपुत्र आज प्राप्त हुआ। बच्चों की इस पत्रिका को पढ़कर अत्यधिक आनंद की अनुभूति होती है। पत्रिका में बाल कहानियाँ, कवितायें, चुटकुले, प्रेरक प्रसंग, ज्ञान-विज्ञान संबंधी जानकारी तथा मनोरंजन करने वाले चुटकुले और ज्ञानवर्धक खेल, पहेलियाँ और बालकों के मानसिक विकास संबंधी सामग्री का विशेष समावेश रहता है।

भारतीय परम्पराएँ और हमारी सांस्कृतिक विरासत की अनुभूति कराने, सुसंस्कारों के निर्माण तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणादायी प्रसंगों का उल्लेख रहता है जो बालकों के जीवन निर्माण हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी तथा उपादेय है।

पत्रिका की साज-सज्जा, विषयवस्तु से संबंद्ध चित्रांकन, तथा संबंद्ध टिप्पणियों को आत्मसात कर पाठक भीतर तक पहुंच पाने में सहजता का अनुभव करता है। बालकों की सृजनशीलता व सुशुप्त प्रतिभाओं को उजागर करने में देवपुत्र की महती भूमिका रहती है। प्रयुक्त सामग्री के अध्ययन द्वारा बालकों के चारित्रिक विकास के साथ ही उनकी मौलिक उद्भावना को संबल प्रदान करने में यह पत्रिका सक्षम है। बाल मनोविज्ञान पर आधृत इस पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को कोटिशः साधुवाद।

• शंकरलाल माहेश्वरी (भीलवाड़ा)

नेकी का फल

चित्रकथा - देवांशु वत्स

अमरूद की आत्मकथा

कहानी : कृष्णदास चौधरी

बच्चो, मुझे अमरूद, जाम, जामफल, बिछी के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजी में मुझे ग्वावा कहते हैं। मेरा वानस्पतिक नाम सिडियम गजावा है और मैं मिरठेसी परिवार का सदस्य हूँ।

बच्चो, भारत वर्ष में मैं आसानी से पाया जाता हूँ। मेरा फल आप लोगों को इतना अधिक स्वादिष्ट लगता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आधे घरों में एवं शहरी क्षेत्र में कालोनी के भूखण्डों में अल्प जगह में भी मेरा रोपण कर दिया जाता है। इसी से मेरी लोकप्रियता जगजाहिर है। आप लोग सोचते होंगे कि इतना लोकप्रिय फल तो हमारे देश का ही होगा किन्तु ऐसा नहीं है। मेरा मूल जन्म स्थान अमेरिका है जहाँ से पुर्तगाली भ्रमणकर्ता मुझे अपने साथ ले आये और मेरा स्वाद व रंग और गुण इतना अधिक पसंद किया गया कि भारत वर्ष में मैंने फलों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। मुझे गरीब व अमीर सभी चाव से खाते हैं।

मैं लगभग सभी तरह की भूमि में आसानी से रोपित हो जाता हूँ। मैदानी क्षेत्र से लेकर पहाड़ी क्षेत्र में ४००० फीट की ऊँचाई तक मेरी पैदावार ली जा सकती है। बीजद्वारा मेरा रोपण किया जा सकता है एवं वानस्पतिक प्रजनन द्वारा भी। वानस्पतिक प्रजनन वाली पौध से दूसरे वर्ष ही फल प्राप्त हो जाते हैं।

बच्चो, वैज्ञानिकों ने शोध करके मेरी कई उन्नत किस्में विकसित की हैं। जिसमे इलाहाबाद,सकेत, लखनऊ ४९ चित्तीदार, लालगूदा , बेदाना, एपल, ग्वालियर २७ करेला आदि मुख्य हैं। बेदाना किस्म में बिलकुल बीज नहीं रहता और खोपरे जैसा स्वाद रहता है। एपल दूर से देखने पर सेवफल ही प्रतीत होता है। काटने पर ही जामफल मालूम पड़ता है। गमले में रोणप के लिए जापानी किरण भी है। जिसमें छोटे–छोटे अधिक बीज वाले फल लगते हैं।

बच्चो! मेरे पुष्प सुगंधित और सफेद रंग के होते हैं अतः शहद की मक्खियाँ मेरे फूलों की ओर आकर्षित होती हैं। वर्ष में मेरी दो फसलें आती है। वर्षाकाल और शीतकाल में। शीतकाल की फसल ही मुख्य हैं जिसमें मेरे कल ५०० से ७०० ग्राम तक के आ जाते है। इन्दौर के फलबाग के नाम से मेरी बिक्री बहुत अधिक होती हैं। मनुष्य के साथ साथ तोता, मैना, बन्दर, खरगोश भी बहुत चाव से पसंद करते है।

बच्चो, मानव के लिए मैं बहुत गुणकारी श्रेष्ठ फल हूँ। मुझमें विटामिन ए व ई के साथ अन्य तत्वों का भी भरपूर भंडार समाया हुआ है। मेरे फलों को ताजा ही खाना चाहिए। मेरे बारे में आयुर्वेद विज्ञान कहता है प्रातः ६ से ९ के मध्य में हीरे का गुण रखता हूँ। अतः मुझे ताजा ही सेवन करना चाहिए। भोजन में सलाद के रूप में मेरा उपयोग किया जा सकता है। मेरी सब्जी भी बहुत उपयोगी व स्वादिष्ट बनती है जो कि आप लोगों को विशेष प्रिय है। मेरे फलों से जैम, जैली, चाकलेट, शर्बत आदि बनाए जाते हैं इस प्रकार डिब्बा बन्द पदार्थों के उपयोग में मेरा औद्योगिक महत्व है।

मेरा औषधिक उपयोग बहुत है। पेट साफ रखने के लिए अर्थात कब्ज की मैं सवोत्तम औषध हूँ। दांत दर्द में मेरे पत्तों को चबाया जाता है। सर्दी हो जाने पर मेरे फल को आग में पकाकर खाने से शीघ्र ही बहती नाक बन्द हो जाती है। मेरे तने से बन्दूक के हत्थे व अन्य महँगा फर्निचर बनाया जाता है।

तो बच्चो, आप मेरे ताजा फलों का उपयोग अधिक से अधिक करके स्वस्थ रहने का प्रयास करना और परिवार में भी करवाना।

• इन्दौर (म.प्र.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

नितेश गुरंग

कहानी : विजयकांत मिश्रा

''मिस्टर मिश्रा! तुमको आसाम में सेना के कुछ क्षेत्र में सॉफ्टवेयर में कुछ सिस्टम और प्रोग्राम डालने जाना है और वहाँ पर सैन्य कर्मचारियों को ट्रेनिंग भी देना है। यह काम कम से कम तीन महीने चलेगा।''

''सर! हमेशा मुझे ही क्यों बाहर भेजा जाता है। मैं अभी तो गुजरात में काम करके लौटा हूँ, मेरा भी परिवार है, घर में बच्चे पढ़ रहे हैं, सर मेरे काम करने से यहाँ बारह कर्मचारी फ्री हो जाते हैं। सर, मैंने मन लगा कर काम सीखा तो सभी को मैं ही दिखता हूँ। सर मैं भी इंसान हूँ आप किसी ओर को भेजे।'' मैंने स्पष्ट बोल दिया।

जनरल मेनेजर हंस कर बोले– ''सो तो है।''

मैं कोटा राजस्थान में एक सरकारी कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। तन,मन से काम करता था तो काम में पारंगत हो गया। लेकिन सरकारी कंपनी होने के कारण कुछ स्टॉफ के कर्मचारी तो यूनियनबाजी के कारण मुक्त हो गए थे कुछ प्रबंधन के चमचे बन कर कामचोर हो गये थे यह बात प्रबंधकों को भी पता थी।

मैं मेहनत से काम करता था तो किसी की गलत बात सुनता भी नहीं था ये ऊपर तक का प्रबंधन जानता था। मुँह पर साफ भी बोल देता था। प्रायः खास जरूरी काम मुझसे ही कराए जाते थे। भृत्य ने आकर मुझसे कहा आपको बड़े साहब बुला रहे हैं।

''सर! आपने मुझे बुलाया?''

''देखो मिश्रा जी! आपको तत्काल आसाम जाना होगा। मैंने आपकी बात ऊपर तक पहुँचा दी है, यह सेना का गोपनीय काम है, आप मेरी बात मत मानो किन्तु आदेश तो मानो यह देखो निदेशक के भी हस्ताक्षर हैं।''

मेरे ऊपर बहुत दबाव डाला। फिर मेरा भी मन नहीं माना क्योंकि एक तो ये सेना का काम है सेना २४ घंटे सीमा पर विषम परिस्थिति में काम कर रही है और हम?

घर पर सभी बन्दोबस्त करके मैंने दिल्ली होते हुए राजधानी से गोहाटी तक का आरक्षण करा लिया।

कार्यक्रम में गोहाटी रेल्वे स्टेशन पर कर्नल नारायण को आकर लेना था। पूरे कार्यक्रम में कर्नल नारायण ही मुख्य समन्वयक थे। उनके अनुसरण में मुझे सारा काम करना था। उस समय आसाम में हवा जरा बिगड़ी हुई थी वातावरण में गर्माहट थी, मुझे सख्त सूचनाएं थीं कि मैं किसी से मिलूं–जुलूँ नहीं। पूरे काम में किसी

को मेरी पहचान पता नहीं होना चाहिए। यानी की दांयें हाथ की बायें हाथ को भी नहीं।

खैर! जैसे ही गोहाटी रेल्वे स्टेशन पर उतरा। कर्नल नारायण ने स्वागत किया। कड़ी निगरानी में सैन्य छावनी ले जाया गया। कर्नल नारायण द्वारा मुझे सभी सूचनाएं दे दी गई।

मैंने कर्नल नारायण से कहा– ''सर, मुझे आज से ही काम बता दें।'' कर्नल नारायण बहुत खुश हुए।

''अरे! मिश्रा जी, आपको तो सेना में होना चाहिए था चलो आपको काम भी बता दें और स्टॉफ से भी मिला दें।

स्टॉफ बहुत मिलनसार था। मुझे एक जीप और ड्राइवर दिया गया था।

रात्रि भोजन में कर्नल नारायण ने सभी सेना के अधिकारियों के साथ मुझे भी बुलाया था। भोजन में ज्यादातर मांसाहारी था। मैं शाकाहारी था। अतएव कुछ भी नहीं खाया। कर्नल नारायण ने इसे अनुभव किया।

रात को अतिथि गृह में दूध पीकर सो गया। दूसरे दिन सेमिनार में कर्नल नारायण ने कहा कि ''भाई मिश्रा, तुम तो महा पंडित हो, ऐसे कम ही देखे हैं। तुम्हारे लिए शाकाहारी रसोइया देखते हैं। कुछ दिन तक रसोइया नहीं मिला। मैंने ब्रेड, दूध, बिस्किट खाये।

एक दिन कर्नल नारायण ने मुझ एक सैनिक के साथ कामाख्या माताजी के दर्शन को भेजा। दर्शन बहुत अच्छे हुए। वापसी में अचानक एक १५–१६ साल का लड़का जीप के सामने आ गया। लड़का टकरा कर अचेत हो गया। मैं उसे शीघ्र उठाकर पास के अस्पताल ले गया। वह बेहद भूखा और गरीब सा लग रहा था। होश आने पर उसने अपनी स्थानीय भाषा में कुछ कहा जो किसी के भी समझ में नहीं आया। खैर! उसकी बातों को हमने इशारे से समझा उसको भी बताया गया कि तुम इशारे में अपनी बात कहो। उसे अस्पताल में भर्ती करा के खाना खिला कर और कुछ पैसे देकर हम विश्रामगृह आ गए।

दूसरे दिन मेरा मन नहीं माना में जीप में बैठकर अस्पताल पहुँच गया। वह ठीक था और उदास सा बैठा था। इशारों में उसने बताया कि वह अपने गाँव से आजीविका की खोज में गोहाटी आया है। अभी तक उसे कोई काम नही मिला है। वह दो दिन से भूखा था। वह कोई भी काम करने को तैयार था। उसके बोलने से उसका नाम गितेश गुरुंग पता चल रहा था जो सही था।

मैंने उससे खाना बनाने के बारे में बात की।

''सर! सर आप मुझे रख लें मैं सब सीख लूंगा।''

मैंने कर्नल सा. से बात की उन्होंने मुख्यालय से विशेष अनुमति लेकर उसे अस्थाई रसोइया रखवा दिया।

गरीब होने के कारण वह घर से खाली हाथ आया था। मैंने उसे अपने पैसों से कपड़े आदि दिलवा दिये। कुछ पैसे मनीआर्डर से उसके घर भिजवा दिए। इससे वो बहुत खुश हुआ। वो मन लगाकर हर काम करने लगा। शाकाहारी रसोई का भी जल्दी अभ्यास कर लिया। जल्दी उठकर नहाने का पानी गर्म कर देना। गर्म नाश्ता बनाना, गर्म खाना बनाना।

मुझे नहा धोकर पूजा करता देख वह भी नहा धोकर मेरे साथ पूजा भी करने लगा। उसमें हर जानकारी जानने की ललक देखकर मैंने उसे स्लेट, बत्ती, पेन, कॉपी, किताबें भी दिला दी। खाली समय में वह पढ़ाई करने लगा। वो हर काम तेजी से करता और मन लगा कर पढ़ाई भी करता। हर काम मेरे कहने से पहले कर देता।

कुछ ही समय में हर काम में उस पर आश्रित हो गया। उसने कभी मौका नहीं दिया कि मैं परेशान होऊँ आगे से आगे वह हर काम कर दिया करता था। वैसे एक अनपढ़ लड़के से मुझे इतनी आशा नहीं थी। वह मेरे साथ गायत्री मंत्र और हनुमान चालीसा का पाठ भी करने लगा।

अब मुझे अलग–अलग स्थानों पर भी भेजा जाने लगा। मेरा जाना बहुत गोपनीय रहता था। फटाफट तैयार हो कर पूरे साजो सामान के साथ निकलना होता था।

कभी ट्रक से, बस से, ट्रेन से, हेलीकॉप्टर आदि से जाना होता था। हेलीकॉप्टर यात्रा में वह पूरे समय हेलीकॉप्टर से ऊपर से नीचे आँखें फाड़ कर जमीन को देखता रहा।

एक बार गंगटोक के पास एक स्थान पर काम हेतु जाना पड़ा। वह नितेश का गाँव ही था।

''सर, आप मेरे गाँव आए हैं तो मेरे परिवार से मिल लें, सर, हम गरीब हैं, लेकिन यदि आप चलेंगे तो सब बहुत खुश होंगे।''

मैंने कर्नल नारायण से संपर्क किया उन्होंने सावधानी बरतते हुए सादे वेश में सुरक्षा जवानों के साथ जाने की अनुमति दे दी। नितेश का नया रूप देखकर वो सभी बहुत खुश हुए। मुझे भी उन्होंने टोपी और शाल पहनाई। उनके प्रेम से में भी अभिभूत हो गया। काम चलता रहा। कर्नल नारायण मेरे काम से पूर्ण रूप से संतुष्ट थे।

समय निकलता जा रहा था। मैं भी अपना प्रोजेक्ट वर्क निपटाता जा रहा था लेकिन ये सब नितेश की मेहनत और लगन का ही नतीजा था। लिखना पढ़ना सीखते हुए वह आगे बढ़ता रहा। नितेश मेरे जीवन का अंग बन चुका था। मैं चाहता था कि नितेश अपने जीवन में कुछ बन जाये। रोज भगवान से प्रार्थना भी करता था कि भगवान नितेश कुछ बन जाए। ये बात नितेश को भी पता थी। वह तन मन से पढ़ने भी लगा। वह कुशाग्र बुद्धि का परिश्रमी लड़का था।

समय पंख लगाए उड़ता जा रहा था। मेरा प्रोजेक्ट वर्क समाप्त होने को ही था। कर्नल नारायण मेरे काम से बहुत प्रसन्न और संतुष्ट थे।

लेकिन मेरा मन बहुत घबरा रहा था मैं नितेश के बगैर कैसे रह पाऊंगा।' मैं जितना कमजोर होता जा रहा था नितेश उतना ही मजबूत था। शायद पहाड़ी लोग जितना शरीर से मजबूत होते हैं उतना ही मन से भी।

आखिर प्रोजेक्ट वर्क समाप्त हो गया। कर्नल नारायण ने एक शानदार कार्यक्रम रखा। साथ ही प्रोजेक्ट वर्क पूरा होने का प्रमाण पत्र भी दिया। गोहाटी स्टेशन पर कर्नल नारायण अपनी यूनिट के कुछ लोगों के साथ मुझे छोड़ने भी आए। नितेश भी अपने परिवार के साथ आया था। स्टेशन पर मुझे बहुत भावभीनी बिदाई दी जा रही थी।

कर्नल नारायण बोले-''मिश्रा जी, आपने बहुत अच्छा काम किया। कोई काम हो तो अवश्य बताना।''

''सर, आप कृपया नितेश का ध्यान रखना।''

''अरे! उसको तो आज ही हमने अस्थाई शाकाहारी रसोइया रखा है।'' नितेश चलते चलते मेरा हाथ अपने हाथों से कसकर पकड़ कर बोला।

''सर, आपने मेरा जीवन बनाया। मैं आपको कुछ बन कर दिखाऊंगा।'' वो भाव विह्वल था।

ट्रेन गति पकड़ चुकी थी। मैं गेट पर खड़ा-खड़ा रोता हुआ हाथ हिला रहा था।

इतनें में टी. टी. ने कंधे पर हाथ थप थपाया-

''सर में बीस मिनट से आपका विदाई उत्सव देख रहा था। मुझे लग रहा था, ये बिदाई समारोह भावुक और संवेदनापूर्ण होगा।''

''सर ये प्रथमश्रेणी का डिब्बा है। यहाँ रोने की अनुमति नहीं हैं। आप सीट पर बैठें में टिकट चेक करूँगा तब तक आप बचा हुआ भी रो लें।'' यह सुन कर मुझे न तो हसना आ रहा था, न रोना।

''खैर! में कोटा आकर अपने काम में व्यस्त हो गया। बरसों निकल गए।

बहुत समय बाद एक दिन नितेश का फोन आया।

''सर! आसाम से नितेश गुरुंग का नमस्कार। सर आप मुझे भूल गए?''

अरे नितेश तुम? बिल्कुल नहीं भूला।

''सर! अब आप मोबाईल को ट्रूकालर चालू कर लें। अब आप घर में कमरे में पंखा चला कर आराम से बैठ जाएं। अब मेरी बात सुनते समय आप रोएंगे नहीं, मुझे ट्रूकालर में सब दिखेगा।''

''सर! मैं सभी परीक्षा पास करके आसाम रेजीमेंट में चुना गया हूँ। ये सब आपके कारण संभव हुआ है सर मुझे सैनिक वेश में देखें। आशीर्वाद दें।''

''शाबाश! नितेश यार शाबाश। अब तो तुम देखो कि मैं रो रहा हूँ या हँस रहा हूँ।''

शाबाश नितेश शाबाश तूने उड़ना सीख ही लिया।

● कोटा (राज.)

किससे कौन बड़ी

बसंत पंचमी का है मेला, सरस्वती पूजन की बेला,
अलमन आकर एक पड़ी, प्रतिमा किससे कौन बड़ी?

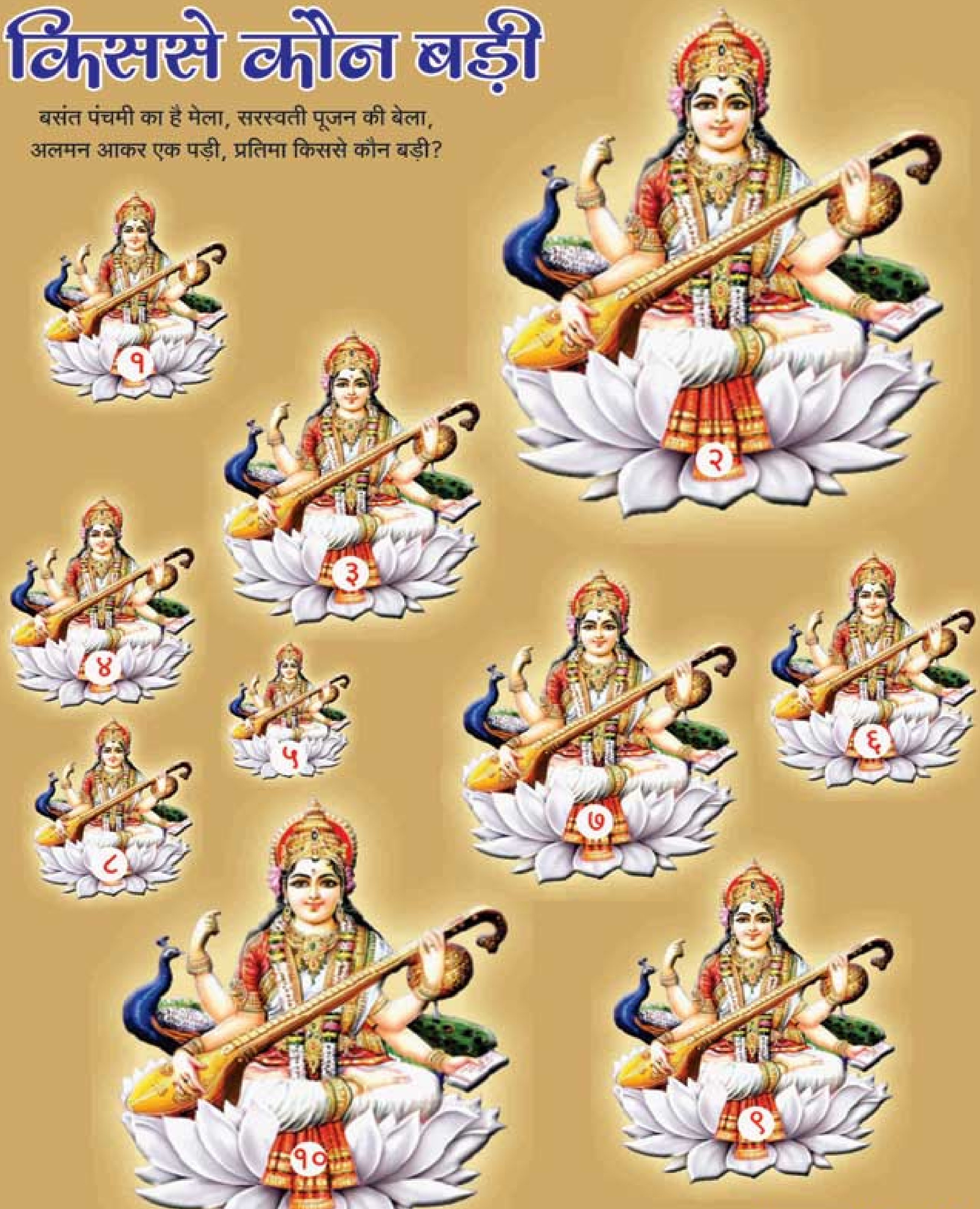

(उत्तर इसी अंक में।)

।। सरस्वती जयंती ।।

विश्व वसन्त में सरस्वती

आलेख : बनवारी लाल ऊमरवैश्य

माघ शुक्ल पक्ष पंचमी को श्री पंचमी के नाम से जाना जाता है। श्री का अर्थ लक्ष्मी, कात्यायनी और सरस्वती है। श्री पंचमी के दिन वसंत का जन्म होता है और सरस्वती की पूजा होती है। दोनों जयन्तियां पूरी दुनिया में मनाई जाती है। यूनान की म्यूज पूजा सरस्वती पूजा थी।

वसंत ऋतुराज कहलाता है और वह श्रीकृष्ण का विराट रूप है। महाभारत काल में उन्होंने गाण्डीवधारी अर्जुन से बताया था ''मैं ऋतुओं में वसंत हूँ।'' बालक वसन्त के स्वागत में प्रकृति श्रृंगार करती है। वृक्ष की डाली को वह पलना बनाती है। उस पलने में वृक्षों के नये-नये पत्ते बिछा दिये जाते हैं। बालक वसंत को फूलों से बना झिगोला पहना दिया जाता है। उन्हें जादू-टोना न लगने पाए इसलिए कमल की कलियां उनके सिर पर राई और नमक का टीका लगा देती है। लताएं बुरी नजर से बचाने के लिए बालक वसंत को लता से ढंक देती है। कोयल गाती है और मयूर नाचते है। सुग्गे उनका मन बहलाते हैं। हवा के झोंके पलना झुलाते हैं और वसंत किलकारियां मारते हैं।

युवा होने पर वसंत का विवाह मधुश्री और माधव श्री के संग होता है। इसी वसन्त की परी को यूनान में **रीया** और रोम में **सिब्बले** कहा जाता है। माधव श्री इटली में फेमिना बोली जाती है। उनकी पूजा लड़कियां उद्यानों में करती हैं। सौन्दर्य की **रानी वीनस** यूनान के जंगल के फूलों से सजे पलने पर हिण्डोले का आनन्द लेती है। **फ्लोरा देवी** के चूमने से सारे फूल खिल उठते हैं और तितलियां उन रंग बिरगें फूलों पर झूमने लगती है। इस प्रकार सारी दुनिया में वसंत का अभिनन्दन होता है। कवि टामस ने वसंत को **वर्ष का राजा** कहा है।

वसंत का इसी रंग पर्व पर कला और संगीत की देवी **सरस्वती की पूजा** होती है। इन्हें वाग्देवी यानी विद्या की देवी कहा जाता है। श्री पंचमी के दिन सरस्वती पूजा के साथ-साथ पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में

लड़किया पीले वस्त्र पहनकर केसरिया रंग के साथ पिचकारी से होली खेलती हैं। सरस्वती के हाथों में वीणा और पुस्तक होती है तो संगीत और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है।

इस देश को ऋषभ के बेटे भरत के नाम से भारत वर्ष कहा जाता भरत की दोनों राज कुमारियां ब्राह्मी और सुन्दरी सरस्वती की बेटियाँ थीं। ब्राह्मीने जिस लिपि ओर लेखन रूप का आविष्कार किया था। उसे आज ब्राह्मी लिपि कही जाती हैं। सुन्दरी ने चित्रकला, अल्पना और रंजन कला का प्रचार किया था जो आज प्राविधिक कला कहलाती है।

यूनान में संगीत की **देवी म्यूज** की पूजा होती थी। उस देश में कविता, कहानी, कला, इतिहास, भूगोल आदि की चौदह सरस्वती होती थीं। कवि होमर ने म्यूज की वन्दना की थी। वाल्मीकि, व्यास, याज्ञवल्क्य,उतथ्य आदि ने सरस्वती के वरदान से कवि और ज्ञानी हुए थे। चीन में नील सरस्वती की पूजा होती थी। सामदेव में सरस्वती के वरदान से कवि और ज्ञानी हुए थे। चीन में **नील सरस्वती** की पूजा होती थीं। सामवेद में सरस्वती की सात बहने बतायी गई हैं। दक्षिण की **विजयांका** भी सरस्वती थी, कालिदास की **विद्योत्तमा** साक्षात् सरस्वती थीं।

एथेंस की सरस्वती मिनर्वा कला और बुद्धि की देवी थी। साम्राट् फिसियाड ने उनका मंदिर बनवाया था। जहाँ मिनर्वा अन्तर्ध्यान हुई थी वहां जैतून वृक्ष उग आया था। यूरोप की लड़किया जैतून के पत्ते का मुकुट पहन कर मिनर्वा का स्वांग करती है। मिनर्वा भाषण के साथ-साथ सामान्य ज्ञान, विज्ञान और प्रतियोगिता की सरस्वती है। **चेरी** विज्ञान की सरस्वती थी।

जब खेतों में सरसों खिलती है तब उसकी वासन्ती रंग में देश के जवान और किसान झूम उठते हैं। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के कंठ से फूट पड़ता है। **फूली सरसों ने दिया रंग, वीरों का कैसा हो वसंत**। वसन्त उल्लास, उमंग, आशा और शौर्य जगाता है ताकि हम आतंकवाद से देश की रक्षा कर सकें। सरस्वती विद्या की देवी है जो हमें विज्ञान और कविता शक्ति की प्रेरणा देती है।

• **मीरजापुरा (उ.प्र.)**

।। बाल प्रस्तुति ।।

पंछी पहेली

अविनाश देवांगन

(१)

उसके सिर पर ताज है
प्यारे-प्यारे पंख,
उसका सुन्दर नाच देखकर
झूम उठे हैं अंग।।

(२)

हरे वस्त्र है गलकंठी
राम नाम मुख बोले,
नही साधु संन्यासी देखो
ज्ञानी अर्थ टटोले।।

(३)

बोली तेरी सबसे न्यारी
बसंत ऋतु है मुझको प्यारी,
जब आता आमों पर मौर
तब सुनते तुम मेरा शोर।।

• **बिर्रा (छ.ग.)**

(उत्तर इसी अंक में)

कुछ दाने तुम

दो लघु

उनकी छत काफी बड़ी है और कुछ सामान भी वहाँ पड़ा रहता है। उसकी सामान की ओट में कबूतर अण्डे देते हैं और बच्चे निकलते हैं। आज बच्चों की माँ जाने लगी तो अपने बच्चों से बोली–

''बच्चो, आज मकर संक्रांति है। आज के दिन लोग पुण्य कमाने के लिए तरह–तरह के दान करते हैं, जिसमें पक्षियों को दाना भी डालते हैं। मैं यों गई और यों आई। आज मैं बहुत सारा दाना लेकर आऊंगी। तुम बाहर मत निकलना। अभी छोटे हो। बाहर कौए–चील तुम्हें अपना भोजन बना सकते हैं। जरा संभलकर रहना।'' और वह उड़ गई।

उसे हमेशा की बजाया ज्यादा चुग्गा मिला। उसने बहुत सारा चुग्गा चुगा। सोचा आज मेरे बच्चों को ज्यादा भोजन मिलेगा।

बच्चे अपनी माँ का इंतजार करने लगे। छः से सात, आठ, नौ बज गए, मगर उनकी माँ नहीं आई। उनके पास घड़ी तो नहीं होती, मगर समय का पता तो उनको भी चल जाता है। बच्चे अपनी भूख भूलकर अब माँ की चिंता करने लगे कि वो अभी तक आई क्यों नहीं? कहीं कोई अनहोनी तो नहीं हो गई? वे बहुत उदास हो गए और विह्वल हो बुरी तरह से चिचियाने लगे। थोड़ा मुँह बाहर निकालकर देखते, मगर माँ की बात याद कर वापस पीछे हट जाते।

इस बार उनको पड़ोस वाली कबूतरी काकी आती हुई दिखाई दी तो बच्चों ने उससे पूछा– काकी! माँ आपके साथ ही गई थी। आप तो आ गई, मगर हमारी माँ कहाँ रह गई?''

''बच्चों हम दोनों साथ ही गईं थीं। साथ–साथ चुग्गा चुगा। तुम्हारी माँ ने आज तुम लोगों के लिए ज्यादा भी चुगा था। हम वापस आ ही रही थीं कि पतंग की डोर से उसका एक पंख कट गया और लहुलुहान होकर वह जमीन पर गिर पड़ी। उसने मुझसे कहा कि मैं तो अपने बच्चों के पास जा नहीं सकती, बहन मेरे मुँह में कुछ दाने तुम ले जाओ और मेरे बच्चों को दे देना।''

सही उत्तर

।। संस्कृति प्रश्नमाला ।।

(१) गृद्धराज सम्पाति, (२) मद्रराज शल्य, (३) जावा (इंडोनेशिया), (४) आनन्दपुर साहिब, (५) राज तरंगिणी, (६) ललितादित्य मुक्तापीड़, (७) अरब, (८) नसीराबाद, (९) भगिनी निवेदिता (१०) हिमालच प्रदेश (कांगड़ा जिला)

मेरे भाई के लिए

उर्मिला माणक गौड़

हमारी संस्था का काम है गरीब, बीमार और असहाय लोगों की मदद करना। भूखे को भोजन कराना। इसी सिलसिले में बसंत पंचमी पर मिठाई के डिब्बे लिए और पहुँच गए उन गरीब बच्चों के बीच जिनको एक समय का भोजन भी मुश्किल से मिल पाता है। जो झोंपड़पट्टियों में रहते थे और सरकारी शाला में पढ़ते थे।

यह उनके खेलने का समय था और बच्चे खेल रहे थे। हमें देखते ही उन लोगों ने हमें घेर लिया। हमने उनसे कहा– ''सभी बच्चे पंक्ति में खड़े जो जाइए। हम आपको मिठाई देते हैं कृपया उसे यहीं खाएँ और कचरा इधर–उधर न फैले इसलिए खाकर डिब्बे कूड़ेदान में डाल दें। इन्हें इधर–उधर फेंकना कतई नहीं।''

कुछ बच्चो ने तो हमारे कहने से पहले ही खाना शुरु कर दिया और बाकी बच्चों ने हमारे कहने के पश्चात, मगर एक लड़की ने हमारे कहने के बाद भी मिठाई नहीं खाई और गुमसुम सी खड़ी रही।

तब हमने उससे फिर कहा– ''बेटा! सभी बच्चे मिठाई खा रहे हैं और तुम हो कि खा ही नहीं रही हो। तुम्हें मिठाई अच्छी नहीं लगती क्या?''

''नहीं काका! ऐसी बात नहीं है। मुझे मिठाई बहुत ही पसंद है, मगर मेरा छोटा भाई अभी घर पर हैं, मैं आधा उसे खिलाकर ही खाऊँगी।'' उसने संयत सा जबाव दिया।

''बेटा! यह तुम खा लो। भैया के लिए हम तुम्हें एक डिब्बा और दे देंगे।''

'' नहीं काका! सबको एक – एक डिब्बा दिया है तो मुझे दो क्यों? मैं उसे मेरे हिस्से से में से ही दे दूँगी।'' उसने बड़ी मासूमियत से उत्तर दिया।

उसका उत्तर सुनकर हमारी आँखें नम थीं।

• बैगलूरु (कर्नाटक)

सही उत्तर

किससे कौन बड़ी ?

५, ८, ४, १, ६, ३, ७, ९, १०, २

।। पंछी पहेली ।।

मोर, तोता, कोयल ।

हम सूर्य के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते...सूर्य एक तारा है. घूमती गैसों की एक बहुत बड़ी गेंद. यूं तो हमारी आकाशगंगा में सूर्य जैसे खरबों तारे हैं पर सूर्य हमारे लिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि वह हमारे सौर मंडल का स्वामी है और पृथ्वी पर सारी उर्जा का स्रोत भी यही है.

विचित्रताओं से भरा हमारा सूर्य

सचित्र प्रस्तुति-
संकेत गोस्वामी

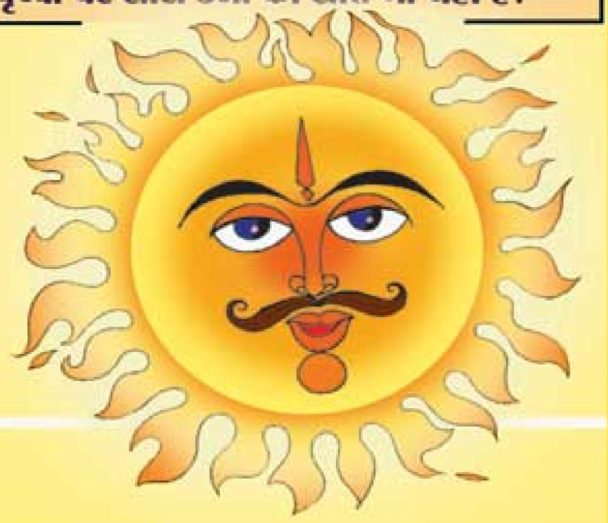

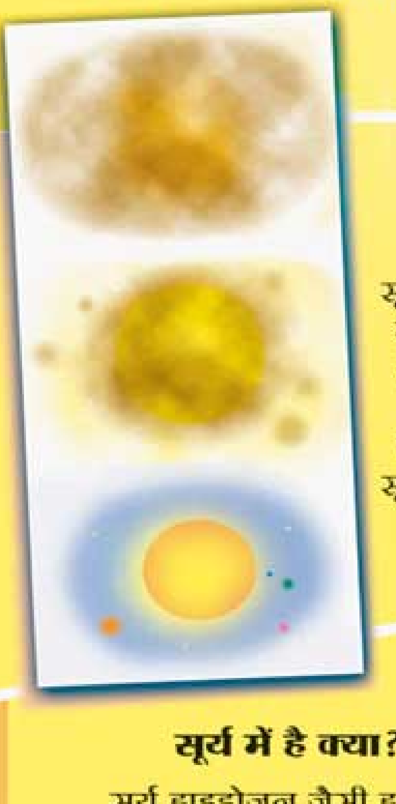

सूर्य कैसे बना?

सूर्य अंतरिक्ष में घूमती गैसों तथा धूल के बादलों से बना है. धीरे-धीरे ये बादल छोटा और घना हो गया. इसमें इतनी ऊर्जा जमा हो गई कि इसका भीतरी भाग बेहद गर्म हो गया और चमकने लगा. इस तरह सूर्य का जन्म हुआ. सूर्य ने करीब 5 अरब साल पहले चमकना शुरू कर दिया था.

सूर्य में है क्या?

सूर्य हाइड्रोजन जैसी हल्की गैस का गोला है, और यह गैस वहां अच्छा खासा उत्पात मचाती है. अत्याधिक गर्मी के साथ यह धीरे-धीरे एक अन्य गैस हीलियम में परिवर्तित हो रही है. सूर्य में प्रति सेकंड 770 मिलियन टन गैस जलती रहती है.

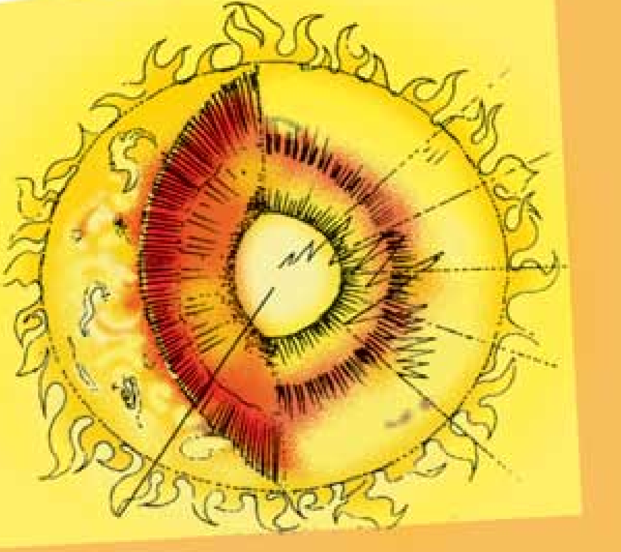

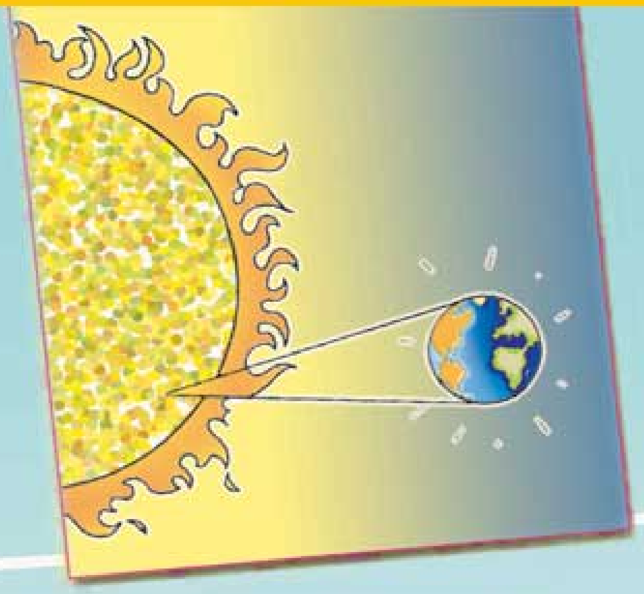

सूर्य का आकार कितना है?

सूर्य एक छोर से दूसरे छोर तक 1392530 किलोमीटर है. गैसों की गेंद सूर्य ने जितनी जगह घेर रखी है कि इसमें 10 लाख से ज्यादा पृथ्वियां समा जाएं. सूर्य, पृथ्वी से 1496 लाख किलोमीटर दूर है. वजन में सूर्य का भार से पृथ्वी से 332000 गुणा अधिक है.

क्या सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है?

नहीं. पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है, सूर्य उसका नहीं. सबसे पहले यह दावा करने वाला व्यक्ति था, मिस्री खगोलशास्त्री, एरिस्टारकोस जो 310 से 250 ईसा पूर्व तक जीवित रहा. लेकिन उसकी यह बात तब किसी ने सच नहीं मानी थी. यद्यपि यह आकाश में चलता हुआ महसूस होता है. पर ऐसा पृथ्वी के घूमने के कारण लगता है. फिर भी सूर्य दूसरी तरह से घूमता है. ये गैसों से बना है और अपनी धुरी पर इसके विभिन्न हिस्से अलग-अलग गति से घूमते है अपनी भूमध्य रेखा पर यह सबसे तेज घूमता है. इसके ध्रुव धीमे हैं.

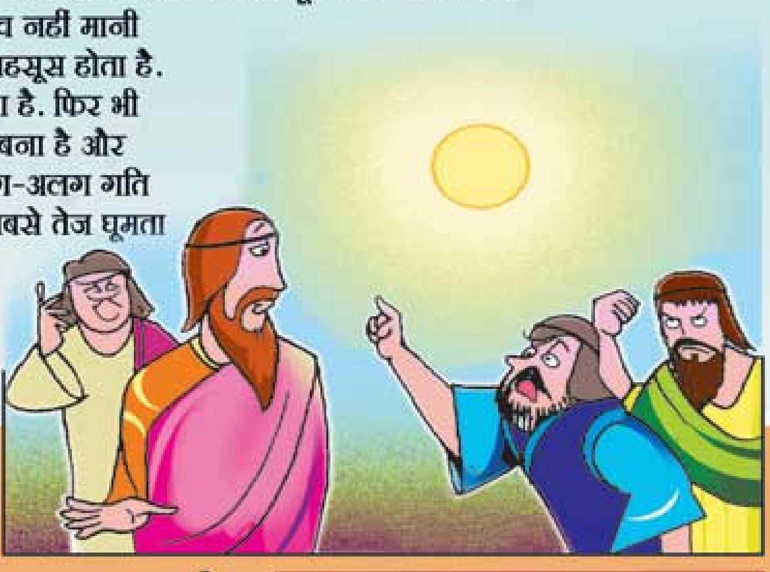

सूर्य के काले धब्बे (कलंक) क्या हैं?

सूर्य का एक दिलचस्प आकर्षण उसके धब्बे हैं. खगोल वैज्ञानिकों ने पाया कि कभी-कभी सूर्य पर काले धब्बे से दिखते हैं. असल में जहां आणविक विस्फोट मचाती गैसों का समूह बाकी जगह से ठंडा है वो हिस्से गहरे धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं. काले धब्बे शेष सूर्य की तुलना में बाकी जगहों से कम प्रकाश देते हैं. काले धब्बों पर तापमान 1500 डिग्री सेंटीग्रेड तक होता है.

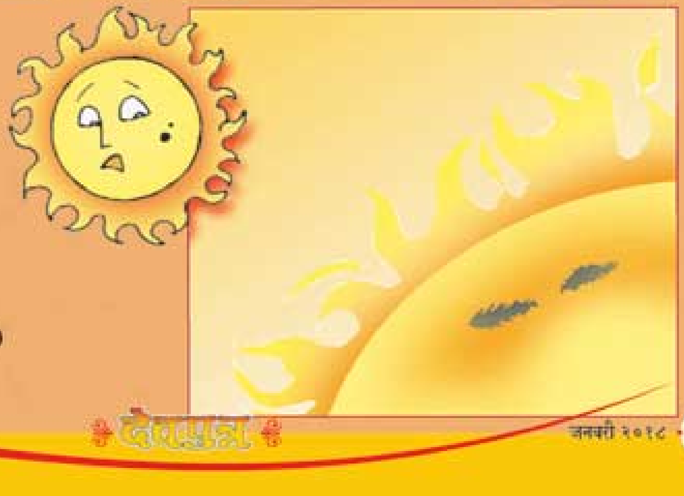

सूर्य कितना गर्म है?

तुम्हें बुखार होने पर तुम्हारे शरीर का तापमान कुछ डिग्री बढ़ जाता है. वही तुम्हें परेशान कर देता है, अब सोचो कि सूर्य मध्य से बेहद गर्म है.इसके मध्य में जहां तापमान डेढ़ करोड़ डिग्री सेंटीग्रेड है वही इसकी सतह पर तापमान केवल 6000 डिग्री सेंटीग्रेड है.असल में सूर्य के मध्य में हाइड्रोजन से हीलियम और हीलियम से हाइड्रोजन गैस के बनने वाली आणविक प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है. यह प्रक्रिया अणु बमों जैसे विस्फोट और तेज प्रकाश पैदा करती है.

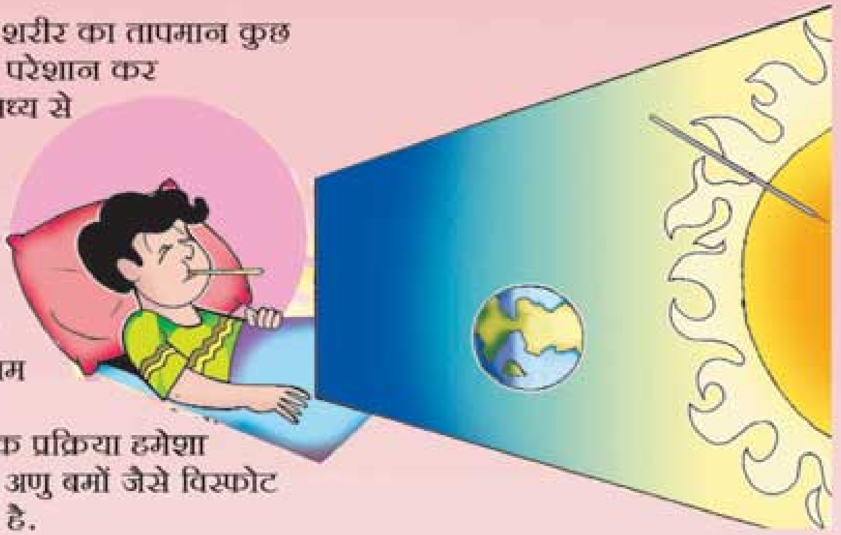

सूर्य का शासन

प्राचीन मिस्रवासी मानते थे कि सूर्य देव 'री' मिस्र के पहले शासक थे. इसलिए उनके बाद हुए सभी राजा उनके वंशज हैं. वहां राजाओं को 'फराहो' कहा जाता था. मृत्यु के बाद फराहो को नदी के पश्चिम दिशा में दफनाने से उनके फराहो की आत्मा अपने पूर्वज सूर्य से जा मिलेगी. हिन्दू धर्म से जुड़े महाकाव्य 'रामायण' में तथा अनेक पुराण कथाओं में भगवान श्रीराम को 'सूर्यवंशी' राजा कहा गया है.

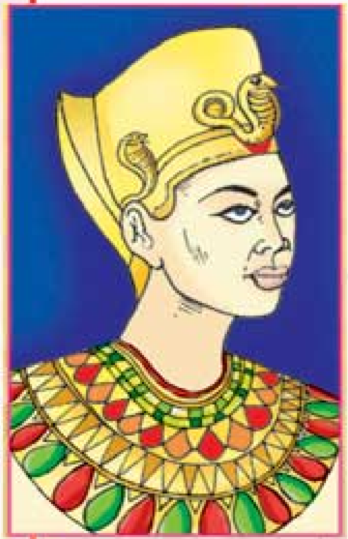

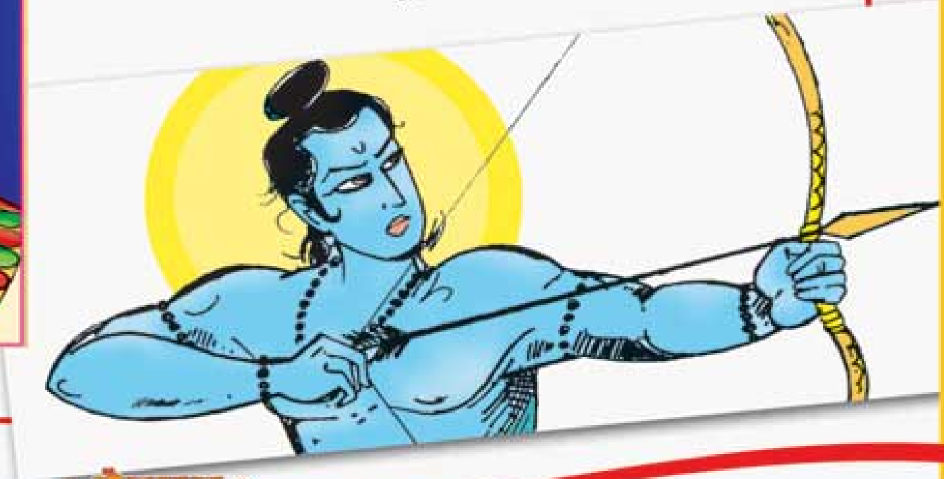

क्या हैं सौर ज्वालाएं?

जलती हाइड्रोजन और हीलियम गैस से बनी सौर ज्वालाएं सूर्य से दूर तक बिखरती रहती हैं. अब तक 402000 कि.मी. दूरी तक सौर ज्वालाएं दर्ज की जा चुकी है और यह दूरी पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी से भी अधिक है.

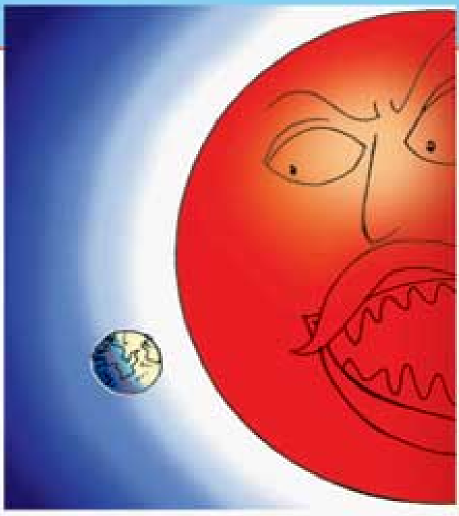

क्या सूर्य कभी समाप्त हो जाएगा?

यह सब जानते हैं लगातार उपयोग से बड़े से बड़ा भंडार भी समाप्त हो जाता है. सूर्य में प्रति सेकंड 300 लाख ट्रकों के बराबर ईंधन खप रहा है. कोई भी वजन कम करने के मामले में सूर्य को नहीं हरा सकता वैज्ञानिकों का मानना है कि सूर्य में हर सेकंड 44 लाख टन गैस खत्म हो रही है.

अभी सूर्य चमक और आकार के हिसाब से एक औसत सितारा है. अरबों वर्ष बाद यह फूलकर बड़ा लाल दैत्य सा हो जाएगा यानी आज के आकार से सैंकडों गुणा बड़ा हो जाएगा. संभवत: तब हमारी पृथ्वी तक की दूरी उसके बढ़ते आकार में ही समा जाए. समय के साथ यह विशाल लाल सूर्य भी सिकुड़ने लग जाएगा और एक छोटा, बहुत नन्हा सा सितारा बन जाएगा. इसका जीवन इस तरह समाप्त होगा कि ये धीरे-धीरे ठंडा होकर अदृश्य हो जाएगा. लेकिन विज्ञानियों की मान्यता है ऐसा होने में करीब 5 अरब से ज्यादा साल लग जाऐंगे तो आज के लिए सूर्य को लेकर 'नो टेंशन'.

समाप्त

।। बालिदान दिवस : २१ जनवरी ।।

वीर बालक हेमू कालानी

आलेख : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

सिंध प्रांत विभाजित नहीं हुआ था। तब की बात है। सुप्रसिद्ध सक्खर शहर में प्रसिद्ध कालानी परिवार का बेटा था हेमू कालानी। २३ मार्च १९२४ को पेसूमल कालानी के घर में प्रियपुत्र के रूप में उसका जन्म हुआ था। उसके काका मंधाराम कालानी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे उन्हीं के प्रभाव से उसमें देशभक्ति का अंकुर फूटा था।

सन् १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन ने संपूर्ण भारतवर्ष को जगा दिया था। उसकी आग सभी दिशाओं में धू धू कर जल रही थी। ९ अगस्त को यह आग बच्चों से लेकर बूढ़ों तक अंग्रेजों की दमन नीति के खिलाफ भड़क चुकी थी। उसने हेमू कालानी के हृदय में भी क्रांति की ज्वाला जला दी। वह उस समय तिलक हाई स्कूल में पढ़ रहा था। उसने अपने सहपाठियों के सहयोग से स्वराज्य सेना नामक संगठन बनाया। इसी संगठन का एक सदस्य एक गुप्त समाचार लाया कि आन्दोलनकारियों को कुचलने के लिए हथियारों से लैस हजारों ब्रिटिश सैनिकों से लदी हुई विशेष रेलगाड़ी सिन्ध के रोहिणी स्टेशन से रवाना होकर बिलोचिस्तान प्रान्त के क्वेटा नगर जाएगी। यह समाचार सुनकर हेमू कालानी का तथा स्वराज्य सेना के सभी सदस्यों का खून खौलने लगा। निहत्थे विद्यार्थी शत्रु सेना का समाना नहीं कर सकते, परन्तु अपनी स्वराज्य सेना के बल पर रेलगाड़ी को सक्खर से आगे बढ़ने से रोक तो सकते थे।

इस काम के लिए हेमू ने अपने को समर्पित कर दिया। अपने दो साथियों को लेकर वह इस कठिन काम को करने के लिए चल पड़ा। २३ अक्टूबर सन् १९४२ की रात को ये तीनों बालक एक भयंकर कारनामा करके ब्रिटिश शासन की नींव हिलाना चाहते थे। ये तीनों सक्खर शहर के स्टेशन से कुछ दूर एक सुनसान स्थान पर रुक कर रेलगाड़ी की पटरियों के पास खड़े हो गए। उनके हाथों में पटरी उखाड़ने का सामान भी था। उस समय दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। चाँदनी रात में उन्हें इस काम को करने में किसी भी कठिनाई का अनुभव नहीं हो रहा था आख़र डर? डर तो कहीं था ही नहीं। इधर-उधर देखकर वे तीनों रेल की पटरियों की फिश प्लेट खोलने लगे। दुर्भाग्य कहिये या ब्रिटिश सरकार की सतर्कता कि गश्त लगाते हुए दो सिपाहियों ने उन्हें देख लिया। चाँदनी रात जो इनके लिए एक वरदान साबित होती, अब अभिशाप बन गई। उसी चाँदनी में वे तीनों क्या कर रहे हैं उन सिपाहियों को दिखाई दे गया। वे दोनों इन पर बाज की तरह झपटे। दो साथी तो भागने में सफल हो गए परन्तु वीर कालानी हिमालय की भांति सीना तान कर अडिग खड़ा रहा, परिणाम स्वरूप पकड़ा गया। उसके घर की तलाशी ली गई जहाँ कई आपत्तिजनक समाचार पत्र तथा अन्य सामग्री पुलिस को प्राप्त हुई।

उन दिनों 'पीर पगारों के हूरों' की हिंसक कार्यवाहियों के कारण सक्खर जिलें में मार्शल लॉ लागू था। जैसा कि उस समय सभी के साथ हुआ था, हेमू को भी शारीरिक यातनाएं दी गई परन्तु उसने अपनी क्रांतिकारी टोली का पता नहीं बताया। यह उठारह वर्षीय बालक कितना साहसी और सहन शील था यह इस घटना से पूरी तरह स्पष्ट हो चुका था। तब ब्रिटिश अधिकारियों ने हारकर मार्शल लॉ कोर्ट में हेमू पर देशद्रोह का मुकदमा दायर कर दिया। जिरह करते समय उसने भगतसिंह

ही की तरह जज को खरीखोटी सुनाई। जज ने नाराज होकर उसको आजन्म कारावास की सजा सुना दी। हेमू को दुःख नहीं हुआ वरना उसका सीना गर्व से फूल उठा। आगे की कहानी ब्रिटिश शासन की दुष्ट दमन नीति का घिनौना उदाहरण है। कर्नल रिचर्डसन सिन्ध के हैदराबाद शहर में स्थिति मुख्यालय का प्रमुख अधिकारी था। मार्शल लॉ कोर्ट ने हेमू को आजन्म कारावास की सजा सुनाने की रिपोर्ट उसी कर्नल के पास भेजी थी। एक साधारण लड़के का इतना दुस्साहस देखकर वह भड़क उठा और प्रतिशोध की भावना से ओतप्रोत होकर उसने हेमू की आजन्म कारावास की सजा को मृत्युदंड यानी फांसी में बदल दिया। इस युवा क्रांतिकारी की क्षमादान दिलाने के लिए सिन्ध के वरिष्ठ नेता और देशभक्त बीरुमल बेगराज, जमशेद मेहता, साधू टी एस वासवानी, स्वामी हरनाम दास पीर जादा, अब्दुल सत्तार आदि ने भरसक प्रयत्न किये। किन्तु निर्दयी रिचर्डसन अपनी जिद पर पड़ा रहा।

२१ जनवरी १९४३ को जब उसे फांसी स्थल पर लाया गया तब उसका वजन सात पौंड बढ़ गया था। उसने हँसते–हँसते फाँसी के फंदे को अपने आप गले में डाला तथा वहाँ उपस्थित सब लोगों से कहा– ''मुझे गर्व है कि अपने तुच्छ जीवन को विदेशी साम्राज्य को समाप्त करने के लिए भारत माता के चरणों में भेंट कर रहा हूँ।'' अंतिम क्षण इंकलाब जिंदाबाद कहते हुए प्राण त्याग दिए। जेल के बाहर खड़े अपार जनसमूह ने यह नारा सुना।

हेमू के पिता ने हेमू का शव मांगा तो अधिकारियों ने देना अस्वीकार कर दिया। बड़ी सिफारिशों के बाद सायं चार बजे सेना के सख्त पहरे में शव को सक्खर शहर ले जाया गया। उसके अन्तिम दर्शन हेतु अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। अठ्ठारह वर्ष का बालक स्वदेश की वेदी पर बलिदान हो गया। भीड़ की आँखों में आँसू थे और मन में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने का दृढ़ संकल्प था। कहते हैं कि उस समय आकाश में काले बादल छा गए थे। मानो वे भी रो रहे थे।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज के वरिष्ठ अधिकारियों ने हेमू की वीरमाता को स्वर्ण पदक प्रदान किया। एक क्रांतिकारी ने दूसरे क्रांतिकारी को सम्मानित किया।

• नोएडा (उ.प्र.)

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय
सलारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
दूरभाष : 01744-259064 मो॰ +91 9468314303, 94163 93364
e-mail : gitaniketan73@gmail.com
website : www.gitaniketan.org
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संरक्षित
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) से सम्बद्ध

प्रवेश सूचना - 2018-19
6th, 9th एवं 11th आवासीय कक्षाओं में प्रवेश हेतु पंजीकरण प्रारंभ
PROSPECTUS AVAILABLE
OFFICE : RS. 300/- | BY POST RS. 350/-
ENTRANCE TEST :
SUNDAY, 18TH FEBRUARY 2018

❖ युगमनीषी परमपूजनीय श्री गुरुजी द्वारा 1973 में स्थापित। ❖ देश के 21 राज्यों के छात्र अध्ययनरत, 600 छात्रों के आवास की व्यवस्था। ❖ मनोरम, भव्य, आकर्षक परिसर एवं संस्कारक्षम परिवेश। ❖ बोर्ड व प्रतियोगी परीक्षाओं में सर्वोत्तम परिणाम। ❖ विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनेक छात्रों का चयन। ❖ प्रतिभा खोज परीक्षा (NTSE) एवं विभिन्न ओलंपियाड स्पर्धाओं में छात्रों का चयन। ❖ सह–शैक्षणिक गतिविधियों एवं खेल प्रतियोगिताओं में प्रान्त तथा राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन। ❖ प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग सुविधा।

समय पर पंजीकरण करवा कर प्रवेश परीक्षा में अपना स्थान सुनिश्चित करें। प्राचार्य

ये भी

पन्हालगढ़ किले से रात के दस बजे शिवाजी महाराज को पालकी के साथ ६०० सैनिक मुक्ति पथ पर अग्रसर हुए। नीचे सिद्दी जौहर की छावनी से नाच गाने की धुन सुनाई दे रही थी। धीरे-धीरे सिद्दी जौहर की छावनी बरसात की मार से और शराब के असर से बेहोश हो गई। पन्हालगढ़ किले के सैनिक अपने अपने काम पर तैनात हो गए। पालकी किले का परिसर छोड़कर संकरी पगडंडी पर बढ़ने लगी तो वर्षा जोरों पर थी। जैसे-जैसे बादलो की कड़कड़ाहट तेज होती गई, वर्षा का जोर बढ़ता गया, वैसे ही मावले वीरों का निश्चय हिलोरें लेता गया। कहीं पर भी महाराज को पैदन चलना पड़े, यह उन्हें स्वीकार नहीं था। एक खाली पालकी भी साथ लेने का महाराज ने थाग्रह किया था।

दूतों ने रास्ता पहले ही खोज रखा था। बड़ी सावधानी बरती जा रही थी। अंधेरे में फुर्ती से ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी चोटियों और दरों के बीच चलना बड़ा ही कठिन हो रहा था। पहाड़ी के ऊपर बड़े-बड़े पनाले तेजी से नीचे की ओर गिर रहे थे। यह यहां भी एक विशेषता है इसीलिए इसे पन्हालगढ़ के नाम से पुकारा जाता है।

मावले रात में सूरज को अपने कन्धों पर उठाये बड़ी हिम्मत से चले जा रहे थे। संकट का डर तो पग-पग पर था ही। अभी पहाड़ी पार कर जरा ढलान पर चले, तो सामने सिद्दी की छावनी दिखाई देने लगी। घेरे की सीमा नजदीक आ रही थी। मावले अपनी सांस रोके और बिना आवाज किए मुक्तिपथ पर अग्रसर थे। वर्षा और तूफान और धीरे-धीरे तेज होता जा रहा था। ईश्वर की इच्छा ही ऐसी थी कि महाराज धीरे से सुरक्षित निकल जाएं, जासूसों द्वारा निर्धारित मार्ग बिल्कुल सुनसान था, कहीं भी पहरेदार का निशान तक दिखाई नहीं दिया। अब महाराज की पालकी मैदान से गुजर रही थी तो घेरे की सीमा शुरु हो गई। किसी भी क्षण, कुछ भी हो सकता था। पग चल रहे थे, पर साँसें रुकी थीं। जरा सी भी आवाज नहीं। पालकी घेरे के पिछवाड़े पहुंच गई, परन्तु अभी संकट टला नहीं था। घेरे से पार तो हो गये थे। परन्तु संकट से बाहर नहीं। अभी पत्थर की मार में थे, अब तीर की मार में पहुँचे। थोड़ी ही देर में बन्दूक की मार से भी परे हो गए।

एक संकट टला, सब महाराज घेरे के बाहर थे। पन्हालगढ़ से विशालगढ़ ४० मील की दूरी तय करनी थी। मैदानी इलाके में पहुँचे तो कीचड़ ही कीचड़ होने के कारण चप-चप की आवाज शुरु हो गई। बारह सौ पैरों की चप-चप की आवाज भी कोई मायने रखती है। विशालगढ़ किले पर जाने का यही एकमात्र मार्ग था। सैनिक चलने के अलावा कहीं रुकने को तैयार न थे। बाजीप्रभु देशपांडे, जो इस योजना के प्रमुख थे, सब सैनिकों को उत्साहित कर आगे बढ़ने लगे। शिवाजी की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी बाजीप्रभु संभाल रहे थे। यह एक अग्नि परीक्षा थी। अब छावनी का घेरा बहुत पीछे रह गया और विशालगढ़ भी अभी बहुत दूर था। अब क्या होगा कोई नहीं जानता था। दूर गश्त लगाने वाले सिद्दी के सैनिक कहीं जंगल में टोह लेनै काम पर तैनात होंगे ही। उनसे बच कर निकलना और वह भी छः सौ सैनिकों के समेत, यह कठिन ही नहीं असम्भव नजर आता था। पालकी निकली जा रही थी तो वहीं रास्ते से थोड़ी दूरी पर एक झोंपड़ी के बाहर कोई झांकने लगा। सैनिक समझ गए, धोखा है। विश्वास हो गया कि यह कोई गश्त वाला ही होगा। अब यह छावनी में आकर

धन्य है

सूचना देगा, छावनी जागेगी और सिद्दी के सैनिक पीछा करने निकलेंगे ही।

अब संकट निश्चित था। बिना कुछ कहे सब तेज भागने लगे। भागने से ही कुछ काम नहीं चलेगा, इसलिए आगे जाने के बाद शिवाजी ने खाली पालकी में अपने जैसे ही दिखने वाले एक सैनिक को अपने ही वस्त्र पहनाकर बिठा दिया। बीस–पच्चीस सैनिकों के साथ उस पालकी को धीरे–धीरे पीछे रहने के लिए कहा और स्वयं तीव्र गति से आगे बढ़ चले।

गश्त लगाने वाला सैनिक ऊबड़–खाबड़ रास्ता पार कर अपनी छावनी में पहुँचा। छावनी के सैनिक नींद से जाग उठे और बड़बड़ाए– ''बांध लगा क्या उस शिवाजी के बच्चे को?''

बेचारे सैनिक यही विचार कर सोए थे कि शिवाजी को छावनी में हाथ बांध कर लाया जाएगा। स्वप्न में भी वे यही देख रहे थे। अतः वहीं बड़बड़ाने लगे। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि शिवाजी आया नहीं और किले से निकल गया, घेरा लांघ कर भाग गया तो सिर पकड़कर बैठ गए। सिद्दी जौहर को आनन–फानन में गहरी नींद से जगाया गया। वह चिल्लाया– ऐसा नहीं हो सकता । तुमने क्या ख्वाब देखा है? इतना बड़ा घेरा फांद कर व सही सलामत कैसे निकल सकता है?'' जासूस ने हकीकत बयान की। ''ख्वाब नहीं, हुजुर। हकीकत है, मैंने अपनी आँखों से देखा है कि शिवाजी पालकी में बैठा है और मावले पालकी को कंधे पर उठाए जा रहे है।''

एक ही क्षण में सिद्दी जौहर की आंखों के सामने अंधेरा सा छा गया। रंगीन सपने हवा में उड़ गए। आज सबेरे ही जो मुरादें उससे अपनी मुट्ठी में बांधी थीं, वे रेत की तरह उंगलियों के रास्ते रिस गई। उसने अपने हाथ मसले। थोड़ी देर में कुछ हिम्मत बांधी और अपने दामाद सिद्दी मसूद को हुक्म दिया– '' पकड़ो शिवाजी को भागने मत देना।'' फुर्ती से सिद्दी निकला, फौज निकली, परन्तु घोड़ों को कीचड़ में दौड़ना बड़ा कठिन था। तो भी घोड़े जैसे–तैसे चल रहे थे। आँख फाड़–फाड़कर सैनिक शिवाजी को खोजते चले जा रहे थे। जब उन्हें छावनी से निकले काफी समय हो गया तो बिजली कड़की। उसके प्रकाश में देखा कि पालकी को उठाए कुछ मावले जा रहे हैं। सिद्दी मसूद घोड़े की पीठ पर ही उछल पड़ा। उसने गरज कर कहा–''पकड़ो, काफिर को घेरो, निकलने नहीं देना।'' आखिर पालकी घेरी गई। सिद्दी मसूद ने कड़कती आवाज में कहा– ''इस पालकी में

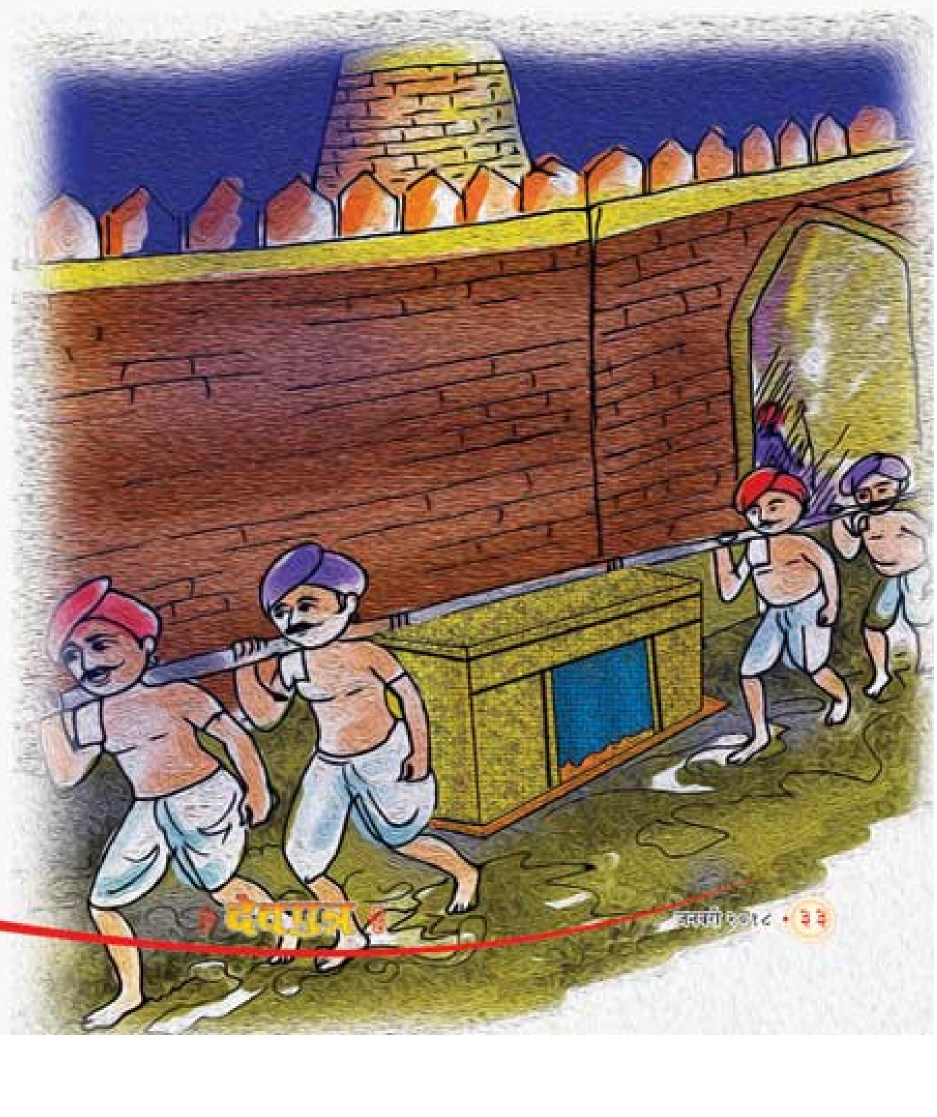

कौन है?'' एक मावले ने उत्तर दिया– ''शिवाजी महाराज।'' सिद्दी ने पर्दा हटाने का हुक्म दिया। पर्दा हटाया गया तो मसूद को सच में शिवाजी महाराज नजर आए। उसने दूर से ही कहा– ''पालकी छावनी की ओर ले चलो।'' पालकी आगे–आगे सैनिक पीछे–पीछे लम्बा रास्ता पार कर सब छावनी पहुच गए। कुछ घुड़सवार तो वैसे ही पहले पहुंचे थे। उन्होंने सिद्दी लौहर को सूचना दी– ''पालकी में बैठकर शिवाजी भागने की कोशिश कर ही रहा था, तो मसूद की बहादुरी से पकड़ा गया।''

सारी छावनी इकट्ठी हो गई, खुशी के कारण सिद्दी फूला नहीं समा रहा था। दामाद सिद्दी मसूद का लाख–लाख शुक्रिया अदा करने लगा। परन्तु आषाढ़ मास में जैसे बिजली चमकती हैं और बाद में अंधेरा होता है, वैसा ही हुआ। सिद्दी के हुक्म से शिवाजी की पालकी का पर्दा एक मराठा सैनिक ने हटाया। शिवाजी महाराज बाहर निकले और खड़े हो गए। सब गौर से ताकने लगे। क्या यही शिवाजी है? सिद्दी को कुछ संदेह हुआ। ''तोबा, तोबा,'' सिद्दी ने पूछा– ''तू कौन है?'' सैनिक ने उत्तर दिया– ''मेरा नाम शिवाजी है।'' सिद्दी ने गरज कर कहा– ''धोखा देता है। मैं शिवाजी को पहचानता हूं। कौन है तू? शिवाजी का भूत तो नहीं है। हम भूत से नहीं डरते। अभी तेरे टुकड़े–टुकड़े कर दिया जायेंगे। सच बोल तू कौन है?'' सैनिक बोलने लगा– ''खाँ साहेब, सच कहता हूं मैं किले का शिवाजी नाम का नाई हू। किले पर खाने का सामान कम हो गया है, भूखों मरना पड़ता है। अतः वहां से चुपके निकला हूं। घर की ओर जा रहा हूँ। खाँ साहेब, जान बश्खो।'' शिवाजी वेषधारी नाई ने खासी बात बनाई। सिद्दी जौहर ने पूछा– ''क्या शिवाजी किले से निकल गया है? नकली शिवाजी ने कहा–''इतना मजबूत घेरा लांघकर शिवाजी कहां निकल सकते हैं? आपके होते हुए परिन्दा भी उड़ नहीं सकता। सुना है, महाराज कल आपकी छावनी में आपसे मिलने आयेंगे। आपने उनकी जान बख्शी है, इसलिए वे खुश हैं। इस खुशी में कल किले पार नाच गाना भी हुआ था।''

सिद्दी जौहर ने फिर से पूछा–''क्या शिवाजी अभी किले पर ही है?'' जवाब किला –''हाँ खाँ साहेब, अभी किले पर ही है।'' खान के जासूस ने आगे आकर बड़े जोर से कहा–''ये झूठ बोल रहा है। पूरा नाटक रच रहा है। बड़ा चालाक दिखता है। खाँ साहेब, मैंने अपनी आँखों को धोखा नहीं दे रहीं। खुदा के नाम पर ये आप अर्ज करता हूं कि अब देर नहीं करनी चाहिए। पीछा किया जाना चाहिए।''

सिद्दी जौहर के तो होश उड़ गए। सच क्या हो सकता हे, चक्कर फंस गया। अगर शिवाजी किले पर ही हुआ और हम पीछा करने निकल पड़े तो वह किले से बाहर आते ही छावनी पर टूट पड़ेगा। तौबा, तौबा दाल में कुछ न कुछ काला जरुर है। जबरदस्त धोखा हुआ है। भूत का खेल बेशक न हो, लेकिन यह सच है कि शिवाजी हवा बन कर निकला है।

सिद्दी ने फिर से हिम्मत बटोरी। फिर से नकली शिवाजी से पूछा– ''यह शिवाजी जैसे कपड़े क्यों पहने है। यह टोप कहां से उठाया?'' नकली शिवाजी ने बड़े आत्मविश्वास से जवाब दिया– ''खाँ साहेब, मैं जात का नाई हूं। महाराज जी ने मुझे ये कपड़े दिये हैं। यह टोप पुराना है। नौकर से मांगा तो उसने दे दिया। हमारे किले के पहरेदार ने मुझे शिवाजी समझकर कुछ कहा नहीं। मैं चुपे से निकल आया। खाँ साहेब, खुदा के लिए जान बख्शो। मैं तो अब कहीं का न रहा। घर जाकर बाल बच्चों को मिलूंगा अपने बच्चों की कसम मैं सच बोल रहा हूं।'' गुस्से में जौहर गर्जा, ''चुप हरामजादे।''

सिद्दी जौहर अपने दामाद मसूद की ओर देखकर बोला– ''अपनी सेना लेकर दौड़ो। शिवाजी को पकड़ो। मैं खुद यहीं तैयार रहता हूं। हो सकता है शिवाजी झांसा दे रहा हो। शिवाजी सेना लेकर अपनी छावनी पर हमला भी बोल सकता है।''

(शेष अगले अंक में)

प्रायश्चित

नाटक : श्यामा गुप्ता 'दर्शना'

गर्मियों की छुट्टियों के बाद आज विद्यालय का पहला दिन था। सभी खुशी–खुशी शाला आए थे। अपने अपने दोस्तों से मिलकर छुट्टियों के किस्से सुनाने में ऐसे व्यस्त थे, जैसे वे आपस में वर्षों बाद मिले हों। सबके चेहरे उस खुशी से चमक रहे थे।

तभी मोहन का ध्यान हरीश पर गया जो चुपचाप सा बैठा अपने बस्ते से कुछ निकालने का प्रयत्न कर रहा था और गहरे सोच में विचारमग्न था। मोहन ने हरीश को इस तरह खामोश सा बैठा देखा तो पूछा– ''क्या बात है दोस्त! किस गहरे सोच में डूबे हो क्या छुट्टियों में मजा नहीं किया। मोहन के पूछने पर हरीश चुप नहीं रह पाया बोला– ''देखते नहीं आज कक्षा में गिरीश के न होने से कैसा सूना–सूना सा लग रहा है। तुम्हें पता ही है गर्मी की छुट्टी लगने के पहले की वह घटना जब मैंने बिना सोचे समझे गिरीश को नीचा दिखाने के लिये उसके बस्ते में कुछ बच्चों के पेन, पैंसिल और कपियां रख कर उस पर चोरी का आरोप लगा कर उसे कितना शर्मिंदा किया था। उसके लाख मना करने पर भी कक्षाध्यापक ने उसे कक्षा से बाहर कर दिया था। हम सभी बड़े खुश हो रहे थे कि चलो हमारा एक प्रतिदंद्वी तो रास्ते से हटा खासकर मैं क्योंकि वह हमेशा ही प्रथम आता था। चाहे मैं कतना भी मेहनत से पढ़ूँ, पर बाजी हमेशा ही गिरीश मार जाता, आखिर मैंने ही उसे नीचा दिखाने के लिये वह सब किया था उसके बाद उसने शाला आना ही छोड़ दिया।

कुछ दिनों के बाद ही तो गर्मी की छुट्टियाँ हो गई। मैंने अपने दादाजी जो इलाहाबाद के पास ही एक गाँव में रहते हैं वे वहाँ के जाने–माने जमींदार हुआ करते थे। बड़े दिनों से दादा से मिलने और गाँव देखने का मन था सो चला गया। हरे भरे खेतों, खलियानों, आम के बगीचों में घूमते–घूमते १०, १५ दिन कहाँ निकल गए पता ही नहीं चला और हाँ दादा जी के नये नये किस्से और दादी की परियों की कहानियों तथा चूल्हे की सिकी सौंधी–सौंधी ज्वार, मक्का और गेहूँ की रोटियां उन पर देशी घी और गुड़ तो सोने पर सुहागा थी।

एक दिन मैं जैसे ही खेत से लौटकर आया तो दादा जी आवाज सुनाई दी जो जोर–जोर से अपने नौकर बलुआ को डाँट रहे थे और बलुआ जो अभी कुछ दिन पहले ही दादा जी के यहाँ घर का काम करने आया था। वह बुरी तरह काँप रहा था और रूआँसा हो बार बार कान पकड़कर गिड़गिड़ा रहा था। ''मैंने भला आपके घर चोरी क्यों करूंगा। मैंने तो देखें भी नहीं आपने रूपया कहाँ रखे। चाहे जिसकी सौगंध ले लो।

मेरे पूछने पर दादाजी बोले ''अरे बेटे, कल कुछ जल्दी में था सो रूपये अलमारी में न रख कर यहां इसी कोट की जेब में रख दिये थे सोचा बाद में अलमारी में रख दूंगा। आज तुम्हारी दादी को रूपयों की जरूरत पड़ी तो देखा रूपये इसमें हैं ही नहीं। अब घर में साफ–सफाई का काम बलुआ ही तो करता है। दिन में घर में भी यही रहता है। इसीलिये इससे पूछ रहा हूँ, तो ये नाटकर कर रहा हैं। मैंने पूछा–'' कितने रुपये थे दादाजी ! वे बोले ''ज्यादा नहीं दो हजार ही थे।''

मैं भी थोड़ा परेशान हो गया। इधर बलुआ मेरी ओर ऐसे देख रहा था जैसे मैंने चोरी की हो। उसे इस तरह देख मेरे पूछने पर वह बोला– ''मुझ पर चोरी का आरोप लगाते हो अरे! घर में मेरे अलावा भी तो लोग हैं कहते हुए जोर–जोर से रोने लगा।

इस पर दादा जी उसे खीचते हुए बोले–''अच्छा तो तुम्हारा इशारा गिरीश से है? भला यह अपने ही घर में चोरी क्यों करेगा तुझे शर्म नहीं आई ऐसा कहते हुए।''

बात आई गई हो गई ३, ४ दिन बाद ही बलुआ बोला– ''मुझे अपने गाँव जाना है मेरे बापू की तबियत खराब है मुझे घनुआ ने बताया है कि वह आज ही गाँव से आया है पास के घर में वह भी नौकरी करता है। वह मेरे ही गाँव का रहने वाला है।''

दादाजी ने उसे छुट्टी दे दी। मैंने भी ४, ६ दिन बाद शहर लौटने की बात दादाजी से की, उनकी आज्ञा मिलते ही जब मैं अपना सूटकेस लगाने लगा तो देखा दादाजी का कुर्ता मेरे सूटकेस में ओर उसकी जेब में रुपये। मैं दौड़ा–दौड़ा दादा जी के पास कुर्ता लेकर पहुँचा मुझे इस तरह घबराया सा देखकर और मेरे हाथ में अपना कुर्ता देखकर बोले– ''अरे ये कुर्ता तुम्हारे सूटकेस में था ला देखूँ रुपये भी इसमें ही होंगे?'' हाँ–हाँ दादाजी आप सही कर रहे हैं पर आपका कुर्ता मेरे सूटकेस में कहाँ से आया?''

अरे, तू ठीक कह रहा है उस दिन जल्दी में मैंने ही रुपए इसी कुर्ते में रख दिए थे, सोचा बाद में निकाल लूंगा और भूल ही गया। ओह दादा जी! आप भी ना! मैं तो डर ही गया था। बेचारे बलुआ पर भी आपने बेकार ही आरोप लगा

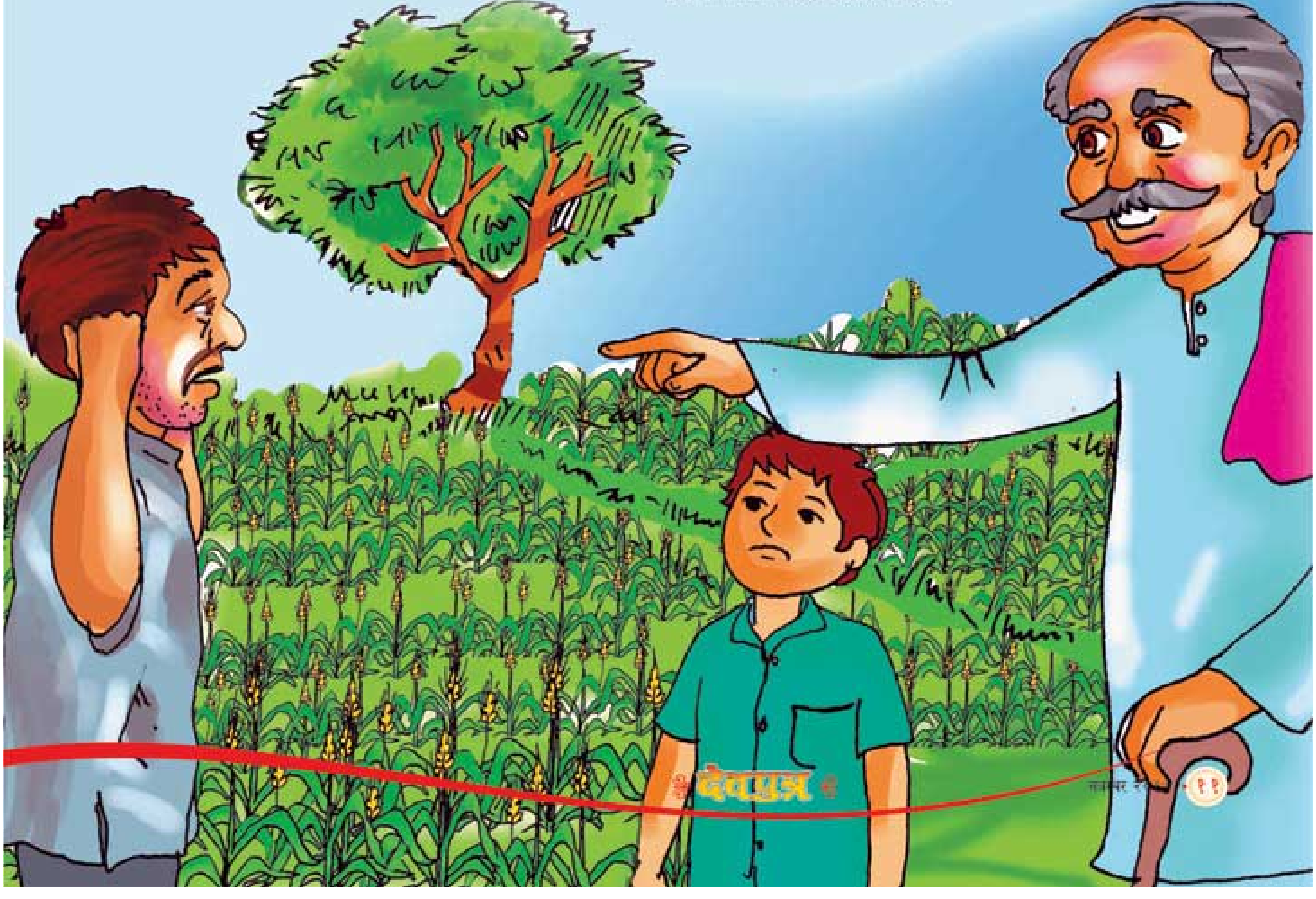

दिया।''

''हाँ बेटे, तुम ठीक कह रहे हो मुझे भी आज अपने पर ग्लानि हो रही है बेचारा बलुआ किस तरह गिड़गिड़ा रहा था और मैंने उसकी एक न सुनी। उसे आने दो मैं स्वयं उससे अपनी गलती के लिए क्षमा मांग लूंगा। आखिर गलती तो मेरी ही है ना। मैंने उसका बहुत दिल दुखाया है भगवान भी मुझे माफ नहीं करेंगे।''

दादाजी की बातें सुनकर और बलुआ का रोता गिड़गिड़ाता चेहरा याद कर मेरा मन भी द्रवित हो गया। साथ ही गिरीश को चोर ठहराने के कृत्य से आत्म ग्लानि से भर गया।

पूरी घटना सुनकर मोहन बोला– ''तुम्हें अपने द्वारा किय गये व्यवहार से पछतावा है तो छुट्टी के बाद हम लोग गिरीश के घर चलते हैं उसे तुम सब सच सच बता देना वह बहुत समझदार है जरूर तुम्हें माफ कर देगा। फिर कल शिक्षक और कक्षा के बच्चों को भी सारी बातें बता देंगे। जिससे उस पर लगा चोरी का आरोप समाप्त हो जाएगा।''

''पर बच्चू शिक्षक तुम्हें माफ नहीं करेंगे समझे न।'' अब गलती की है तो सजा भी मिलेगी।'' कहते हुए हरीश का चेहरा गहरे संतोष से चमक उठा। उसका यह प्रायश्चित का भाव मानों कह रहा हो कि अपनी गलती को मान लेना ही सबसे बड़ी बात है। अचानक घड़ी देखते हुए बस्ता उठाकर बोला'' अरे बस दो मिनिट ही है छुट्टी होने में जल्दी से अपना बस्ता बंद कर'' उसे दो मिनिट का आज जैसे घंटों जैसे लग रहे थे। वह घण्टी बजने का इंतजार बैचेनी से करने लगा।

• **भोपाल (म.प्र.)**

• **विष्णुप्रसाद चौहान**

चुटकुले

नीटू– अपने मित्र को काफी पिलाने ले गया।
नीटू – जल्दी से काफी पी लो, नहीं तो ठंडी हो जाएगी।
मित्र – तो? उससे क्या होगा?
नीटू– अरे, मेन्यू कार्ड देखो, हॉट काफी १५ रुपये की है और कोल्ड काफी ४५ की। ठंडी हो गई तो जेब को भारी पड़ेगी।

*****

शिक्षक (छात्र से) – अपने देश में लोगों की मृत्यु दर क्या है?
छात्र– सर, मृत्यु दर शत प्रतिशत है।
शिक्षक – कैसे?
छात्र – जो जन्म लेता है वह मरता भी है।

*****

शिक्षक – सभी ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हैं।
छात्र – सर, वे वहां पढ़ने जाते हैं या घूमने?

*****

अध्यापक (छात्रों को समझाते हुए)– बच्चो, हमें अपने पिता के नाम से पहले श्री लगाना चाहिए तथा माता के नाम से पहले श्रीमती लगाना चाहिए।
अध्यापक (एक छात्र से) – पंकज तुम्हारे पिता का नाम क्या है?
छात्र– मेरे पिता का नाम श्रीमती राम हैं।
अध्यापक (डांटते हुए) – मैंने तुम्हें कितना समझाया कि पिता के नाम से पहले श्री लगाते हैं।
छात्र– श्रीमन्! मेरे पिता का नाम मतिराम है।

*****

प्रताप सम्मान

श्री छोटेलाल पाण्डेय

बन्धु / भगिनी !

क्रांतिकारियों पर अपने अनुसंधान पूर्ण अनेक खण्डकाव्यों से भारत माता की साहित्य सेवा करने वाले श्री छोटेलाल जी पाण्डेय (सतना) द्वारा इस वर्ष से उत्कृष्ट क्रांति साहित्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य लेकर देवपुत्र के सहयोग से 'प्रताप सम्मान ' की योजना की है। वर्ष २०१७-१८ में क्रांतिकारियों अथवा क्रांति पर उत्कृष्ट साहित्य (किसी भी विधा में) लिखने वाले एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार को ५ हजार का सम्मान प्रदान किया जाएगा।

प्रविष्टि स्वरूप आप अपनी पुस्तक/रचना की ३ प्रतियाँ प्रताप सम्मान २०१७-१८, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर दिनांक ३० अप्रैल २०१८ तक आवश्यक रूप से भेजें। सर्वश्रेष्ठ कृति का चयन निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाएगा।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१८ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें-

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति

कहानी प्रतियोगिता २०१७

देवपुत्र

४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

सेना में चयन

कविता : अश्वनी कुमार पाठक

चयन हुआ सेना में मेरा,
माँ से मिली बधाई।
आँखों में खुशियों के आँसू,
फूली नहीं समायी।
रुँधे कण्ठ से, ठहर-ठहर कर,
बड़े गर्व से बोली-
''नहीं पीठ पर, सीने पर ही-
बेटे, खाना गोली।
जैसी मैं हूँ, माता तेरी,
वैसी भारत-माता।
दूध पिया है मेरा, पर तू-
अन्न इसी का खाता।
नहीं भूलना बेटे! तूने-
जन्म यहाँ है पाया।
धन्य हुआ, अपनी सेवा में-
माँ ने तुझे बुलाया।
दुश्मन है चालाक, न इसके-
झाँसे में तू आना।
सीमा की रक्षा में बेटे,
मर जाना, मिट जाना।
लड़ते-लड़ते युद्ध-भूमि में,
अगर वीर-गति पायी।
बलिदानी वीरों में तेरी,
कथा जायगी गाई।''

• सिहोरा (म.प्र.)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (७)

कथासत्र – ६

संवाद : डॉ. देबेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार, परन्तु शंकर, मनोरमा और माधव के लिए सुखदायक नहीं रहा। उस दिन सुबह से बारिश होने लगी। बाहर बैठना संभव नहीं हुआ। माधव आकर शंकर और मनोरमा के साथ हो लिया। तीनों ने निर्णय लिया कि आज वे दादाजी के कमरे में ही बैठ जाएंगे। बस तीनों चल पड़े। उस समय दादाजी एक पुस्तक पढ़ रहे थे। तीनों राम राम करके कमरे में प्रवेश कर गए और झट से उनके पाव स्पर्श कर फर्श पर बैठ गए।

दादाजी – क्या तुम लोग आज यहाँ पहुँच गए?

मनोरमा – जी हाँ दादाजी! आज सुबह से बारिश हो रही थी, बाहर बैठना संभव नहीं है। इसलिए हम यहाँ ही आ गए। आपको बुरा लगा है क्या?

दादाजी – नहीं, नहीं तुम लोगों ने ठीक ही किया। अच्छा, तो बताओ तो उस दिन हम लोगों ने कहाँ समाप्त किया था?

माधव – (बड़े उत्साह के साथ) नानाजी! च्यु–क्या–फा ने क्या किया था।

दादाजी– ठीक है, अब सुनो। राजकुमार च्यु–क्या–फा देखने में अत्यंत सुन्दर था। उसकी आँखों में आशा की रोशनी थी और टाइ भाषा– संस्कृति पर हार्दिक प्रेम था। वह अभिमानी होते हुए भी नीति के क्षेत्र में अत्यंत उदार था। बचपन से ही उनके आराध्य देवता ''सोमदेव'' के प्रति अपार भक्ति थी। नरा राज्य में जब राज्य का हकदार कुछ नहीं हुए तो च्यू–क्या–फा को ही सिंहासन पर आसीन किया गया था। उसने अठारह वर्ष राज करने के पश्चात भी वह उदास रहे थे क्योंकि राजा होते हुए भी वह राज्य का सही हकदार नहीं है। नरा राज्य का सही हकदार मुगमिकिलिंगदाउ ही है। एक दिन ऐसा ही हुआ। मुंगमिकिलिंगदाउ आ गया। अब क्या किया जाए? नीतिपरायण च्यु–क्या–फा ने सिंहासन छोड़ दिया और मुंगमिकिलिंगदाउ को सिंहासन पर आसीन किया। उन्होंने राज सिंहासन के साथ राजभवन राजसुख भोग सब त्याग दिया। राजनीति में ऐसा त्याग बिरला है, किन्तु यह भी है कि त्याग के बिना कोई महान नहीं बन सकता है। राजपद से हटकर च्यु–क्या–फा अत्यंत चिंतित हो गया। अब क्या किया जाए? अठारह वर्ष राजसत्ता में रहने के पश्चात अब वह अधिकार से वंचित होना पड़ा। अपना कर्तव्य और धर्म उसने निभाया, परन्तु इतना करते हुए भी मन को शांत कर नहीं सका, क्योंकि अधिकार की आकांक्षा और नशा बहुत शक्तिशाली होता है। उसे पराजय तो नहीं कहा जा सकता है, परन्तु मन घायल जरूर होता है। अनेक दिन मन ही मन विचार विमर्श करने के पश्चात उसने निश्चित किया कि वह किसी अन्य देश चला जाएगा। उन्होंने अपने भौगोलिक ज्ञान के द्वारा अनुसंधान प्रारंभ किया और सोचा कि पटकाई पर्वत पार कर कहीं राज्य स्थापना करना पड़ेगा। च्यु–क्या–फा ने खोजने लगा कि पहले उस देश में अपने राज्य से लोग गए थे या नहीं। उन्होंने बहुत खोज बिन करके निश्चित हुआ कि पटकाई पर्वत के उस तरफ ब्रह्मपुत्र घाटी में सौमारपीठ नामक एक राज्य है जहाँ

चुटिया, बराही, कछारी, मरान आदि जातियों का राज है।

मनोरमा– दादाजी! सौमारपीठ राज्य के बारे में अपने बताया यह क्या कोई अलग राज्य है?

दादाजी – नहीं बेटा! उस समय कामरूप एक विशाल राज्य था। वर्तमान उत्तरबंग और बंगलादेश के अनेक हिस्से कामरूप राज्य में थे और सारा राज्य चार भागों में विभक्त था। ये थे कामपीठ, स्वर्णपीठ, रत्नपीठ और सौमारपीठ, समझे?

तीनों–जी हाँ दादाजी, समझ में आ गया।

दादाजी – च्यु–क्या–फा ने दो व्यक्तियों को गुप्त रूप से वहाँ भेज दिया और उस राज्य की बाहर और भीतर की स्थिति की जानकारी लेने के लिए । उन्होंने जाकर देखा कि सभी राजा परस्पर वैमनस्य रखते हैं, युद्ध–विग्रहों में लिप्त हो जाते हैं। सामरिक दृष्टि से भी ये कमजोर हैं। उन्होंने वापस आकर च्यु–क्या–फा को सभी जानकारी प्रदान की। आखिर च्यु–क्या–फा ने कामरूप जाने का निर्णय ले लिया।

उन्हेंने तीन सौ अश्वारोही और एक हजार पदातियों के साथ यात्रा प्रारंभ की। सोमदेव का नाम लेकर। उन्होंने सोमदेव की मूर्ति को अपने कपड़े के अंदर बांध लिया। मुंगकिलागदाउ ने अपने मंत्री और अधिकारियों के साथ उनके अगुवाई के लिए बहुत दूर तक छोड़ने आया और शुभकामना प्रदान कर वापस चले। च्यु–क्या–फा के साथ कोई स्त्री नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इतने जोखिम मार्ग में स्त्रियों को साथ लेना खतरे से खाली नहीं है। अनेक पर्वत, जंगल, नद–नदियाँ पार कर आगे बढ़ते रहे। आसानी से सबको पराजित कर आगे बड़े। इस प्रकार आते आते सन् १२२६ ई. में कामरूप राज्य के सौमारपीठ पर उपस्थित हुए। कामरूप का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर च्यु–क्या–फा आनंद विभोर होकर इस देश का नाम ''मुड़ चुन हुम खाम'' रखा। इसका अर्थ है सोने से पूर्ण उद्यान (देश) वहाँ पहुँच कर उन्होंने शक्ति से नहीं अपितु मित्रता और समता से अपना अधिकार प्रयोग करने का प्रयास किया और कामरूप में अहोमटाइ राज्य का श्रीगणेश किया। इस प्रकार सन् १८२६ ई. तक आहोम वंश के राजाओं ने राज किया था और उसके पश्चात् यह प्रांत भी अंग्रेजों के अधीन हुआ। तब से असम नाम प्रख्यात हो गया। आज करीब पाँच सौ वर्ष पहले एक कामरूपी कवि ने कामरूप के जातियों का नाम इस प्रकार उल्लेख किया था–

''किरात कछारी खाची गारोमिरि
यवन कंक गुवाल।
असम मलुक धोब ये तुरुक
कुवाच मेल्ले चण्डाल''

मनोरमा – उस कवि का नाम क्या है दादाजी?

दादाजी – उनका नाम था श्रीमंत शंकरदेव।

माधव– अच्छा नानाजी! हमारी हिन्दी में जिस प्रकार कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास आदि कवि हुए थे। क्या कामरूप से भी हुए थे?

दादाजी – हाँ हाँ बहुत हुए। उस समय कामरूपी, जिसको आज असमिया कहते हैं भाषा में पर्याप्त साहित्य का सृजन हुआ था।

शंकर उनमें प्रमुख कवि साहित्यकारों के बारे में हमें बताएंगे क्या?

दादाजी – जरूर बताऊँगा। आज समय अधिक हो गया है। राम राम!

तीनो– राम राम!

(निरंतर आगामी अंक में)

रघ्घूमल ने दौड़ जीती

हास्य कथा : सुशील सरित

उनका असली नाम क्या था यह तो नहीं मालूम लेकिन सारे मोहल्ले में वे रघ्घूमल के नाम से ही मशहूर थे। खाकी पैंट या खाकी निकर के साथ नीली कमीज उनका पहनावा था। चांद हमेशा घुटी रहती थी और उस पर हमेशा वे तेल इतना चुपड़ते थे कि वह शीशे की तरह चमकती थी, उस पर बड़ी सी खूब लम्बी चोटी जिसमें कम से कम तीन गांठें लगी रहती थीं।

रघ्घूमल ने कक्षा आठ के बाद विद्यालय का मुंह नहीं देखा लेकिन ऐसी फर-फर अंग्रेजी बोलते थे कि अच्छे-अच्छे अंग्रेज शर्मा जायें। ये दूसरी बात है कि मास्टर गनेशीलाल की नजर में उसमें बहत्तर ग्रामर की गलतियां होतीं। रघ्घूमल ने अपने जीवन में बहुत नौकरियां की और कर के छोड़ दीं। अकेले आदमी का खर्चा ही क्या। घर का एक छोटा सा मकान था, जिसका एक हिस्सा रघ्घूमल ने बंगाली मोशाय को दे रखा था बंगाली मोशाय ने न कभी रघ्घूमल को किराया दिया न कभी रघ्घूमल ने मांगा हाँ रघ्घूमल की खाने-पीने की सारी जिम्मेदारी बंगाली मोशाय के जिम्मे थी। बाकी रघ्घूमल को दो ही शौक थे मिठाई और शर्त का, सो वे किसी न किसी तरह पूरा कर ही लेते थे। हर उमर के बच्चों से रघ्घूमल की खूब दोस्ती रहती। बच्चों को तरह-तरह की कहानियां सुनाने में रघ्घूमल उस्ताद थे इसलिए भी बच्चे उनके प्रसन्न रहते।

एक दिन क्या हुआ कि गिल्ली डण्डा जमा हुआ था। रघ्घूमल पिद रहे थे और बच्चे उन्हें पिदा रहे थे। तभी न जाने कैसे बिट्टू के हाथ से गिल्ली उछली और महेश के सिर से जा टकराई। महेश ने घूर कर बिट्टू की ओर देखा, तो बिट्टू ने माफी मांग ली, लेकिन फिर ऐसा ही जब दो तीन बार हुआ तो महेश खीज उठा, 'तू मुझे जानबूझ कर मार रहा है।' अच्छा चल मार रहा हूँ तो, तू तो वैसे भी फिसड्डी है' फिसड्डी कहीं का 'बिट्टू के होठों पर शरारत उभर आई 'देख में कहे देता हूँ' महेश ने दांत किटकिटाये' 'अरे जा-जा कल तो साइकिल दौड़ में हार

गया था' फिसड्डी कहीं का 'बिट्टू के होठों पर अब भी शरारत थी। 'वो तो मेरी साइकिल की ही हवा निकल गयी थी वरना तो तू ही हारता– नहीं माने तो फिर से शर्त लगा कर दौड़ कर ले 'महेश की खिसियाहट भरी आवाज गूंजी ' अरे तू क्या कोई भी दौड़ बदले, लेकिन साइकिल नहीं स्कूटर की' बिट्टू के स्वर में गर्व झलक आया। 'ठीक है, मुझसे दौड़ रही' इसी रविवार को दोपहर ठीक दस बजे इसी जगह मिलना।' अचानक रघ्घूमल बोल पड़े। तुम तो इतने बड़े हो तुमसे दौड़ कौन करेगा।' बिट्टू सकपकाया 'क्यूं तुम स्कूटर से मैं साइकिल से रघ्घूमल जाने क्या सोच रह थे' रघ्घूमल यार! ऐसे तो जरुर हार जाओगे।' पन्नू रघ्घूमल के कान में फुसफुसाया।'' लेकिन रघ्घूमल ने उसका हाथ दबा कर चुप कर दिया 'क्या कह रहे हो' बिट्टू चौका– 'हाँ–हाँ तुम स्कूटर से मै साइकिल से। बदो शर्त, '' रघ्घूमल ने टुकड़ा जोड़ा' हाँ–हाँ तुम ही चुन लेना। भला स्कूटर साइकिल का क्या मुकाबला' बिट्टू ऐठंता हुआ बोला– तो ठीक है परसों हम सब यहीं इसी जगह मिलेगे, ठीक दस बजे आ जाना। अपने स्कूटर के साथ' रघ्घूमल ने कहा और अपनी साइकिल उठा कर चल दिये।

'हवा भरवा लेना' बिट्टू ने पीछे से हांक लगाई।

दो दिन में ये बात पूरे मोहल्ले में फैल गई कि रविवार की सुबह दस बजते–बजते पूरा मोहल्ला उस मैदान में आ गया। स्कूटर और साइकिल का भला क्या मुकाबला इस गधे रघ्घूमल को भी ये क्या सूझी, मोहल्ले में बड़े–बूढ़े कह रहे थे।

ठीक दस बजते ही रघ्घूमल अपनी पुरानी साइकिल के और बिट्टू अपने नये स्कूटर के साथ आ गये'' अच्छा बताओ दौड़ कहां से कहाँ तक रहेगी।'' बिट्टू मानों जल्दी से जल्दी दौड़ जीतना चाहता था'' देखो खिसियाना नहीं'' रघ्घूमल ने अपनी साइकिल की हवा जांचते हुए कहा '' मिठाई के पैसे लाये हो' बिट्टू ने रघ्घूमल की आँखों में झाँका 'मिठाई तो खैर मिलेगी ही। चाहे मैं हारूं या जीतूं। लेकिन तुम तैयार हो ' रघ्घूमल अपनी साइकिल की गद्दी पर हाथ फेर रहे थे। 'अच्छा बताओ फिर कहां तक बिट्टू ने स्कूटर को किक लगायी। 'देखो नाक की सीध में जाना है और देवी जी के मंदिर का प्रसाद लेकर आना है'' रघ्घूमल ने भी पैडल पर पांव रख दिया '' ठीक है महेश बजाओ सीटी' बिट्टू ने स्कूटर का क्लच दबा कर कहा।

सीटी बजाते ही दौड़ शुरू हो गई। देवजी का मंदिर लगभग ६ कि.मी. दूर था। आज रघ्घूमल को मिठाई खिलानी ही पड़ेगी' सब बच्चे फुसफुसा रहे थे। धीरे–धीरे आधा घंटा बीत गया, फिर पौन घंटा, फिर एक घंटा लेकिन न तो बिट्टू का स्कूटर वापस आया न ही रघ्घूमल। अब तो लोगों की बेताबी बढ़ने लगी। रघ्घूमल तो चलो साइकिल से गये हैं, लेकिन बिट्टू का स्कूटर तो कब का वापस आ जाना चाहिए था।

ठीक सवा घण्टे बाद रघ्घूमल की साइकिल चमकी। हांफते हुए और जल्दी–जल्दी पैडल मारते रघ्घूमल को आते देख बच्चों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। अरे बिट्टू कहाँ रह गया? स्कूटर, फिर भी पीछे, ऐसा तो कहीं नहीं देखा। जितने लोग उतनी बातें। इतने में रघ्घूमल करीब आ गये। महेश और दीपू ने बढ़कर उनकी साइकिल थाम ली। ''मैं जीत गया'' रघ्घूमल खुशी से चिल्लाये और वहीं बैठ गये।

ठीक १५ मिनट बाद बिट्टू का स्कूटर नजर आया।

''कहो कैसी रही दौड़'' रघ्घूमल बिट्टू को देखते ही चहके।

शरम के मारे बिट्टू के मुंह से बोल नहीं फूट रहे थे। उसने चुपचाप ५० का नोट निकाल कर रघ्घूमल को दे दिया और स्कूटर घर की तरफ मोड़ दिया। फिर तो खूब रसगुल्ले उड़े।

''लेकिन भाई रघ्घूमल! भला साइकिल के मुकाबले स्कूटर कैसे हार गया।'' आखिर पुन्नू से नहीं रहा गया।

''अरे भाई देवी जी के मंदिर के दो ही रास्ते हैं और दोनों हैं कच्चे। कल रात की हल्की सी बारिश में उनमें खूब कीचड़ हो गया था। मैं तो अपनी साइकिल को किसी तरह कुदा–फंदा कर निकाल ले गया लेकिन, बिट्टू का स्कूटर उसमें फंस गया, जिसे निकालने में ही वह पीछे, रह गया, बस'' रघ्घूमल ने जैसे अपनी जीत का भेद खोल दिया।

''भाई, इसका मतलब है'' महेश कुछ सोचता हुआ बोला।

''हाँ इसका मतलब है कि मैं आज सुबह ही यह रास्ता देख आया था। रघ्घूमल का जोरदार ठहाका गूंजा और साथ ही बच्चों की तालियां भी। ये दूसरी बात है कि इसी बीच रघ्घूमल दो और रसगुल्ले उड़ा गये।

• **आगरा (उ.प्र.)**

कविता : विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'

गंगा

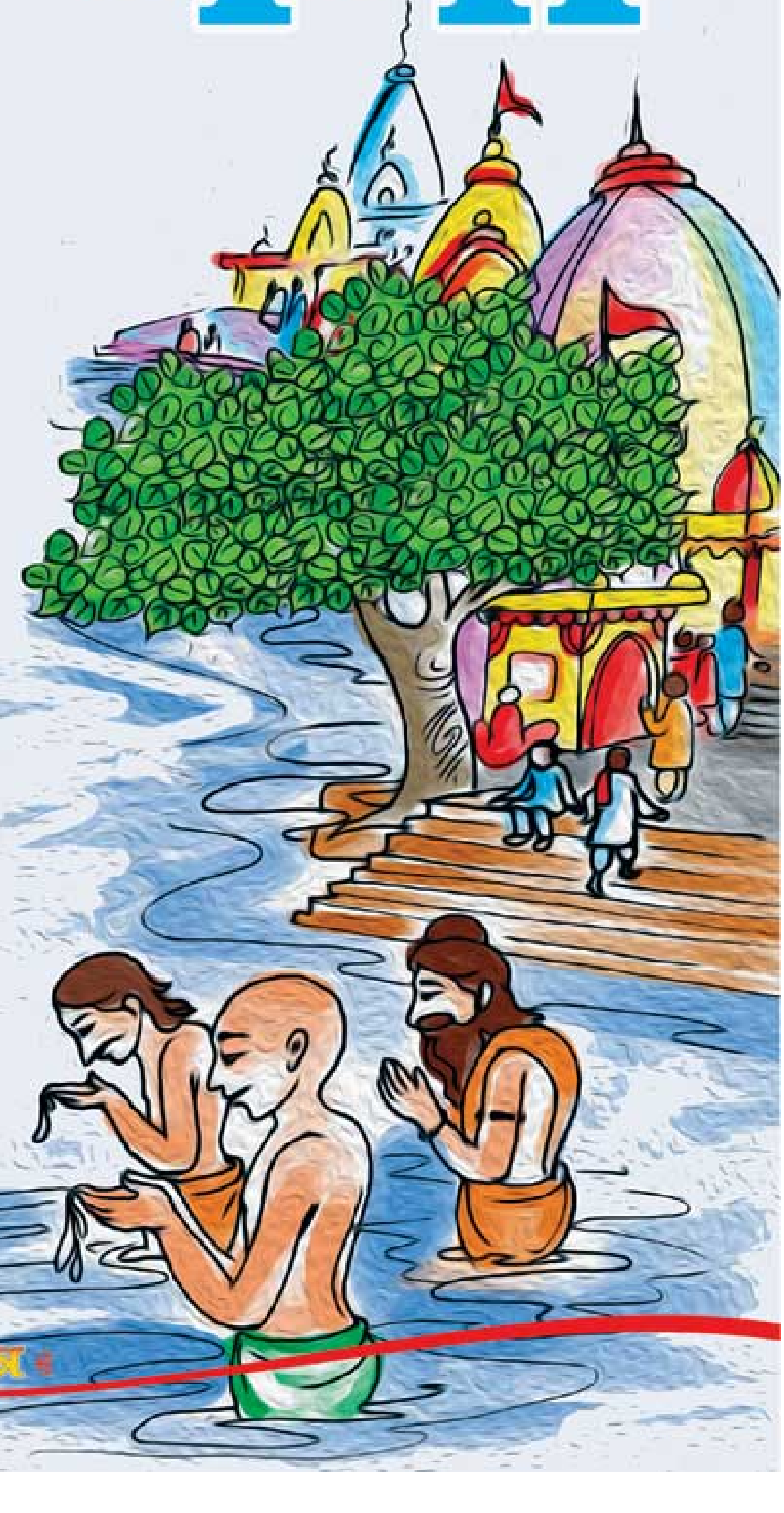

गंगा सब नदियों में विशेष
गोमुख गंगा का आदि स्रोत।
गंगा शुचि जल से ओतप्रोत।
गंगा सागर तक प्रवहमान,
हो गये धन्य कितने प्रदेश।
गंगा सब नदियों में विशेष।।
होता कल-कल का मधुर राग।
हो रहे हरित हैं खेत-बाग।
रह सकें न सूखे वन-उपवन,
सौभाग्यवान सम्पूर्ण देश।
गंगा सब नदियों में विशेष।।
तट बने बहुत से तीर्थ-धाम।
हो गयी प्राकृतिक छवि ललाम।
कितने जलचर पा रहे शरण,
कितनों का मिटता दुःख क्लेश।
गंगा सब नदियों में विशेष।।
गंगा कहती अपना अतीत।
बतलाती निज संस्कृति पुनीत।।
इतिहास कर रही है वर्णित,
कृत-कृत्य हो गया है नगेश।
गंगा सब नदियों में विशेष।।

• लखनऊ (उ.प्र.)

अजनबी से दोस्ती

चित्रकथा - देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

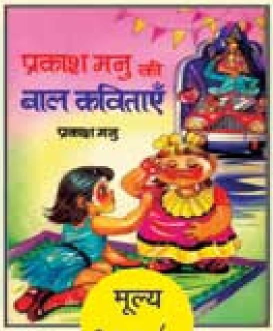

मूल्य ३००/-

प्रकाश मनु की बाल कविताएं

बाल साहित्य के मूर्द्धन्य रचनाकार **प्रकाशमनु** की बच्चों में उल्लास, नटखटपन, चुलबुलाहट और मौज-मस्ती का भाव पैदा करती, लुभावनी, जीवंतभाषा लयात्मक शैली आदि बाल सुलभ सरलता के साथ मनोवैज्ञानिक स्तर पर सफल ६१ बाल कविताएँ।

प्रकाशन – दिल्ली पुस्तक सदन, दरियांगज नई दिल्ली ११०००२

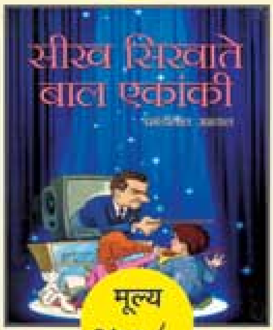

मूल्य ३५०/-

सीख सिखाते बाल एकांकी

सिद्ध हस्त कलाकार **घमण्डीलाल अग्रवाल** के विविध विषयों पर मनोरंजन और प्रेरणा के साथ जागरूक बनाने वाले १४ एकांकियों का संग्रह जिनको शालेय मंचों पर भी सरलता से प्रस्तुत करना संभव है।

प्रकाशन – ग्लोरियस पब्लिशर्स, निकट 'एम' ब्लाक मार्केट, एनेक्सी फ्लोर,
डब्ल्यू-११२, ग्रेटर कैलाश पार्ट-१, नई दिल्ली ११००४८

मूल्य ५०/-

बरसा खूब झमाझम पानी

बाल साहित्य के कुशल चितेरे डॉ. मोहम्मद अरशद खान द्वारा रचित २८ मनभावन मनोरंजन पूर्व बाल कविताएं जिनमें प्रकृति एवं पशु-पक्षियों के अतिरिक्त अन्य बाल पसंद विषयों को सहेजा गया है।

प्रकाशन – एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, ३१९१, वकील स्ट्रीट,
कूचा पगित, लाल कुंआ, दिल्ली ११०००६

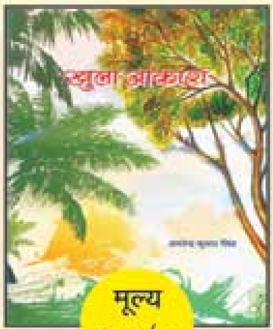

मूल्य ५०/-

खुला आकाश

बाल की विज्ञान सम्बधित जिज्ञासाओं को सरल सुबाध भाषा में प्रस्तुत करने वाले अमरेन्द्र कुमार सिंह की अत्यंत जिज्ञासा जगाने और शमन करके वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा देने वाली रोचक बाल विज्ञान कथाएं।

प्रकाशन – बाल साहित्य संस्थान, दरबारी नगर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सही उत्तर — **अंतर बताओ**

१. बादल कम हैं। २. झंडे के ऊपरी सिरे में अंतर है। ३. तिरंगे के चक्र में तिलियां कम हैं।
४. इमारत में कम खिड़कियाँ है। ५. लड़के की शर्ट में एक बटन कम है।
६. लड़की की रिबन गायब है। ७. एक बच्चा कम है। ५. दीवार की ईंट गायब है।

पतंगें गिनो

• राजेश गुजर

प्रमोद, मकर संक्रांति पर दुकान जाकर सारी रंग बिरंगी पतंगें खरीद ली, लेकिन जल्दबाजी में पतंगों की कुल संख्या नहीं कर पाया, अब वह उसका मूल्य कैसे चुकाएगा, आप ही बताओ कुल कितनी पतंगें हैं?

राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन द्वारा आयोजित

१२-१३वां बाल साहित्य सम्मान समारोह सम्पन्न

चित्तौड़गढ़ (राज.)। बाल साहित्य का सृजन समय की आवश्यकता और भावी पीढ़ी के भविष्य को संवारने वाला होना चाहिए। खास बात यह है कि जिनके लिए साहित्य लिखा जा रहा है। उन तक यह साहित्य पहुँचना बहुत जरूरी है। बाल साहित्य को हल्के में नहीं लेना चाहिए। यह कोई बचकाना सृजन नहीं है, बल्कि साहित्य के साथ भावी पीढ़ी में संस्कारों व ज्ञान का बीजारोपण है। मौजूदा समय में बाल साहित्यकारों के लिए और भी परीक्षा की घड़ी है। यह विचार देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे ने राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन (आकोला) द्वारा २६ नवम्बर, २०१७ को चित्तौड़गढ़ में आयोजित १२–१३वाँ राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कहीं।

विशिष्ट अतिथि इतिहास अध्येता साहित्यकार डॉ. ए.एल. जैन ने कहा कि साहित्यकार राजकुमार जैन राजन ने पूरे देश के बाल साहित्य की लौ जला रखी है। बाल साहित्य की पुस्तकें निःशुल्क देश के कई राज्यों के विद्यालयों संस्थाओं में भेंट कर पठन–पाठन परम्परा को सम्बल देकर सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि गोविन्द शर्मा, संगरिया ने कहा कि राष्ट्रीय शब्द बाल साहित्य के साथ ही लगाना उपयुक्त है। हमें समय के साथ बाल साहित्य का नये शिल्प और संदर्भों में सृजन करना चाहिए। अन्य वरिष्ठ साहित्यकारों में श्री जितेन्द्र निर्मोही, डॉ. कनक जैन आदि ने भी सम्बोधनों में बाल साहित्य का महत्व एवं आवश्यकता को रेखांकित किया। विभिन्न बाल साहित्यकारों की पुस्तकों का विमोचन भी समारोह में किया गया।

नागोर के श्री पवन पहाड़िया को ५५०० रु. व सतारा महाराष्ट्र के मछिन्द्र बापू भिसे को ४००० रु. मूल्य की बाल साहित्य की पुस्तकें निःशुल्क भेंट की।

ये भी हुए सम्मानित :

सलूम्बर की डॉ. विमला भण्डारी, अल्मोड़ा के श्री उदय किरौला, शाहजहाँ पुर के डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', जयपुर की श्रीमती सावित्री चौधरी, रतनगढ़ के श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय, पौड़ी गढ़वाल के श्री मनोहर चमोली 'मनु', जोधपुर के डॉ. डी.डी. ओझा, गांधी नगर (गुजरात) के श्री गुलाबचंद पटेल, पटियाला की श्रीमती सुकीर्ति भटनागर, इन्दौर के श्री प्रदीप मिश्र, भोपाल के श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत', रायपुर के डॉ. सत्यनारायण सत्य, गुड़गाँव (हरियाणा) के श्री हरीश कुमार 'अमित', बरेली के श्री अरविन्द कुमार साहू, झालावाड़ (राज.) के श्री शिवचरण सेन 'शिवा', सोजत के श्री अब्दुल समद राही, दौसा (राजस्थान) के श्री अंजीव अंजुम, जोधपुर की डॉ. जेबा रशीद एवं मथुरा के श्री संतोष कुमार

सिंह को सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप प्रत्येक को दो हजार एक सौ रूपए नगद, प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र एवं बाल साहित्य प्रदान किया गया।

पुस्तकें जो हुई लोकार्पित :

बाल साहित्य संवर्द्धन योजना के तहत प्रकाशित पवन पहाड़िया की 'समझो मम्मा', 'ऐसी जोत जगाएं', प्रहलाद सिंह झोरड़ा की 'चांद खिलौना', आशा शर्मा की 'अंकल प्याज', महावीर रंवाल्टा की 'अनोखा जन्मदिन' एवं अब्दुल समद राही की 'चुनमुन–चुनमुन' बाल साहित्य की पुस्तकों का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। इस दौरान डॉ. शील कौशिक, सावित्री चौधरी, खेलन प्रसाद कैवर्त, नीता अग्रवाल, गुलाबचन्द पटेल आदि की पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं।

इस आयोजन में देशभर के लगभग १६० शब्द शिल्पियों ने भाग लिया। राजकुमार जैन राजन, कीर्ति श्रीवास्तव एव संजय शर्मा के फिर मिलेंगे के उद्घोष के साथ क्रार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बच्चों ने लिया बाल फिल्मों का आनंद

इन्दौर। देवपुत्र और श्रीराम ताम्रकर सिने क्लब इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में विगत १२ एवं १३ नवम्बर को नगर के विभिन्न विद्यालयों ने आठ बाल फिल्मों का आनंद लिया। देवपुत्र के नवनिर्मित सभागार में बच्चों ने भागोभूत, जवाब आएगा, द्वीप का रहस्य, हाथी का अण्डा, कायापलट, ये है छक्कड़–बक्कड़ बम्बो, नेत्रहीन साक्षी और आसमान से गिरा जैसी फिल्मों के माध्यम से न केवल मनोरंजन अपितु जीवन मूल्यों की शिक्षाएं भी प्राप्त कीं। समारोह का शुभारंभ डॉ. मनोहर भण्डारी एवं सन्मति हा.से. स्कूल की प्राचार्य श्रीमती पिंकी जोशी ने किया।

ज्ञातव्य है कि यह समारोह राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्म समीक्षक स्व. श्रीराम जी ताम्रकर की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र श्री समय ताम्रकर द्वारा देवपुत्र के सरस्वती बाल फिल्म संग्रहालय के सहयोग से आयोजित किया गया था।

समारोह का समापन सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष एवं देवपुत्र के प्रधान सम्पादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना एवं प्रसिद्ध साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी के सान्निध्य में हुआ। संचालन एवं फिल्म प्रस्तावना डॉ. विकास दवे ने रखी। आयोजन में देवपुत्र के श्री गोपाल माहेश्वरी एवं श्री गणपति बारस्कर का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

सब सुखी हों।
सब रोगरहित हों।
सब कल्याण का साक्षात्कार करें।
दु:ख का अंश किसी को भी प्राप्त न हो।

औषधियों के निर्माता
रसोमा लेबोरेटरीज प्रायवेट लिमिटेड

फोर्स
DEFENCE ACADEMY

11th & 12th के साथ NDA की तैयारी करें एवं सेना में उज्जवल भविष्य बनाए।

Army, Navy, Airforce, NDA, CDS

विगत वर्षों में सर्वाधिक चयन
इन्दौर का एकमात्र संस्थान
जहाँ कर्नल मनोज बर्मन
के मार्गदर्शन मे
Physical, Written, एवं SSB
की संपूर्ण तैयारी
करवाई जा रही है।

नवलखा, इन्दौर–98260-49151
www.forceacademyindore.com

छत्तीसगढ़
राज्योत्सव 2017

उत्सव निर्माण का
विकास और विश्वास का

छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में मील का पत्थर बनी अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं

छत्तीसगढ़ खाद्य एवं पोषण सुरक्षा अधिनियम 2012
देश का पहला खाद्य सुरक्षा कानून

59.48 लाख से ज्यादा परिवारों को फायदा, राशन कार्ड पर प्रत्येक परिवार को हर महीने प्रति सदस्य सिर्फ एक रूपए किलो में चावल, आदिवासी क्षेत्रों में 2 किलो और सामान्य क्षेत्रों में 1 किलो आयोडाइज्ड नमक मुफ्त

समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन

सहकारी समितियों में 14 साल में 6 करोड़ 92 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी किसानों को 75 हजार करोड़ रूपए का भुगतान

किसानों को ब्याज मुक्त कृषि ऋण

सहकारी समितियों में कृषि ऋणों पर ब्याज दरों को 14 प्रतिशत से घटाकर शून्य प्रतिशत किया गया वार्षिक ऋण वितरण 150 करोड़ रूपए से बढ़कर 3800 करोड़ रूपए तक पहुँचा।

तेन्दूपत्ता संग्राहकों को अब मिलेगा 2500 रूपए पारिश्रमिक

प्रदेश के 13.50 लाख से अधिक तेन्दूपत्ता संग्राहकों के लिए पारिश्रमिक दर 1800 रूपए प्रति मानक बोरा से बढ़ाकर 2500 रूपए करने का निर्णय। संग्राहक परिवारों को निःशुल्क चरण पादुका

सौर सुजला योजना

अब तक 12000 किसानों को आकर्षक अनुदान पर सौर सिंचाई पम्प वितरित, इन्हें मिलाकर 2 साल में 51000 किसानों को सोलर सिंचाई पम्प देने का लक्ष्य

कृषक जीवन ज्योति योजना

सामान्य किसानों को 5 हॉर्स पॉवर तक हर साल अधिकतम 7500 यूनिट निःशुल्क बिजली, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के किसानों को सिंचाई के लिए खपत की जाने वाली पूरी बिजली मुफ्त

मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना

राज्य के समस्त परिवारों के लिए निःशुल्क इलाज की सुविधा वार्षिक 30 हजार रूपए से बढ़ाकर अक्टूबर 2017 से 50 हजार रूपए

मुख्यमंत्री बालहृदय सुरक्षा योजना

हृदय रोग से पीड़ित 6147 बच्चों का निःशुल्क ऑपरेशन

सरस्वती सायकल योजना

हाईस्कूलों की छात्राओं को 200 करोड़ रूपये से अधिक मूल्य की सायकलें निःशुल्क वितरित, बालिकाओं की दर्ज संख्या 65 प्रतिशत से बढ़कर 93 प्रतिशत

2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017

छत्तीसगढ़ ने देश में सबसे पहले वर्ष 2013 में अपने युवाओं को दिया कौशल विकास का कानूनी अधिकार

मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना

अब तक 3 लाख 62 हजार युवाओं को कौशल उन्नयन का प्रशिक्षण

छत्तीसगढ़ युवा सूचना क्रांति योजना

कॉलेजों के 18000 विद्यार्थियों को लेपटॉप एवं 56000 विद्यार्थियों को टैबलेट निःशुल्क वितरित

R.O. No. 62318/5

छत्तीसगढ़ संवाद

सबका साथ - सबका विकास

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना